



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

# भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 13 अक्टूबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 12 ● मूल्य: 5 रुपए



तेजस्वी की विरासत पर पीके की चुनौती



मां दुर्गा की महा कृपा के अद्भुत अनुभव

पेज-10-11



## दिल्ली-एनसीआर में दीवाली पर ग्रीन पटाखों की वापसी

## सुप्रीम कोर्ट ने दी अनुमति, जानें नियम और शर्तें

@ भारतश्री ब्लूरो

**इ**स साल दीवाली पर दिल्ली-एनसीआर के लोगों को ग्रीन पटाखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति दी गई, लेकिन इसके लिए कुछ कड़े नियम और शर्तें तय की हैं। मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवर्ड्न की अध्यक्षता वाली पीठ ने यह आदेश दिया कि ग्रीन पटाखों की बिक्री 18 से 20 अक्टूबर 2025 तक केवल अधिकृत स्थानों पर होगी। इन पटाखों में QR कोड होना अनिवार्य होगा, और केवल वे पटाखे ही बेचे जा सकेंगे जो CSIR-NEERI और PESO द्वारा प्रमाणित हों। साथ ही, इन पटाखों की बिक्री केवल लाइसेंस विक्रेताओं के माध्यम से की जाएगी। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि दिल्ली-एनसीआर के बाहर से पटाखों की बिक्री पर पूरी तरह से रोक रहेगी। यदि कोई उल्लंघन पाया गया, तो संबंधित विक्रेता का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा।

### पटाखे जलाने के लिए समय सीमा

दीवाली के दिन, यानी 20 अक्टूबर 2025 को, ग्रीन पटाखे जलाने की अनुमति सुबह 6 से 7 बजे और शाम 8 से 10 बजे तक होगी। कोर्ट ने यह आदेश दिया है कि इन समय सीमाओं का पालन करना अनिवार्य होगा। इसके अलावा, पटाखों की गुणवत्ता की जांच के लिए नियमित रूप से सैंपल लिए जाएंगे और उनकी रिपोर्ट PESO को भेजी जाएगी।

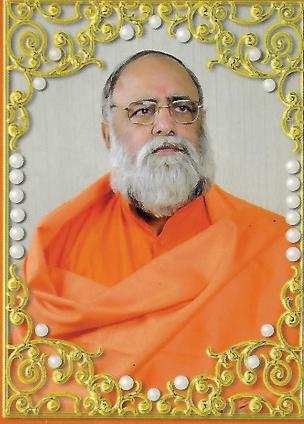
### ग्रीन पटाखे क्या होते हैं?

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधाना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

सद्गुरु वाणी



प्रदूषण फैलाते हैं। इनमें हानिकारक रसायनों की मात्रा कम होती है और ये कम ध्वनि उत्पन्न करते हैं। CSIR-NEERI और PESO ने मिलकर इन पटाखों को विकसित किया है ताकि पर्यावरण पर कम से कम प्रभाव पड़े। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय दीवाली के त्योहार को सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हालांकि, यह अनुमति अस्थायी है और इसके लिए निर्धारित नियमों का पालन करना आवश्यक होगा। यदि आप ग्रीन पटाखों की खरीदारी और उपयोग करना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप केवल प्रमाणित विक्रेताओं से ही पटाखे खरीदें और निर्धारित समय सीमा का पालन करें। इससे न केवल आप अपने त्योहार को सुरक्षित और आनंदमय बना सकेंगे, बल्कि पर्यावरण की रक्षा में भी योगदान देंगे।

### पुराने बंग का असर

कोर्ट ने पिछली सुनवाई में पूछा था कि 2018 में पटाखों पर बैन के बाद AQI (वायु गुणवत्ता सूचकांक) में क्या फर्क पड़ा। सरकार ने बताया कि खास असर नहीं दिखा। इसका मतलब है कि सिर्फ पटाखों पर रोक लगाने से प्रदूषण में ज्यादा कमी नहीं आई, इसलिए कोर्ट ने ग्रीन पटाखों की इजाजत दी। दिल्ली-एनसीआर में केवल दिल्ली ही नहीं, बल्कि हरियाणा के 14 जिले भी शामिल हैं। यह करीब 70% क्षेत्र है जो पहले बैन से प्रभावित था। इसलिए कोर्ट ने यह सोचा कि सिर्फ पटाखों को रोकना संतुलित उपाय नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि उत्सव की भावना और पटाखा उद्योग से जुड़े लोगों के

हित का भी ध्यान रखना जरूरी है। इसलिए, अनुमति दी गई, लेकिन केवल ग्रीन पटाखों और लाइसेंसी विक्रेताओं के लिए। साथ ही केवल NEERI और PESO लाइसेंस वाले उत्पादक ही पटाखे बेच सकते हैं। पटाखे के हर पैकेज में QR कोड होना जरूरी है। गलत या गैरकानूनी पटाखे बेचने पर कार्रवाई होगी।

### पर्यावरण पर असर

ग्रीन पटाखे पारंपरिक पटाखों की तुलना में कम धुआं और कम ध्वनि उत्पन्न करते हैं। यह कदम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्व रखता है। कोर्ट ने पुलिस और पेट्रोलिंग टीम को निर्देश दिया कि वे पटाखों की बिक्री और उपयोग की निगरानी करें। सैंपल जांच के बाद ही पैकेज बाजार में बेचे जाएंगे। पटाखे जलाने की इजाजत केवल सुबह 6-7 बजे और शाम 8-10 बजे तक है। केवल 18 से 20 अक्टूबर के बीच पटाखे बेचने और जलाने की अनुमति।

### त्योहार और समाज पर असर

कोर्ट ने यह भी ध्यान रखा कि लोगों का त्योहार प्रभावित न हो और परिवार और बच्चों को भी पटाखों का आनंद मिले। इस फैसले के बाद सोशल मीडिया पर उत्साह देखा गया, लोग ग्रीन पटाखों के लिए उत्साहित हैं। कई लोग इसे त्योहार की खुशियों को सुरक्षित तरीके से मनाने की दिशा में एक अच्छा कदम मान रहे हैं। INCT और केंद्र सरकार ने कोर्ट से अनुरोध किया था कि लोगों और उद्योग को राहत दी जाए। कोर्ट ने सरकार और उत्पादकों के सुझाव पर फैसला लिया।

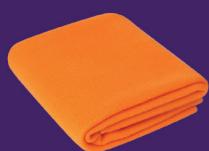


## ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON  
**MNDIVINE.COM**



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986  
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )





# महाभारत के कर्ण का निधन

## कैंसर से जूझते हुए 68 वर्ष की आयु में अलविदा ली

@ रिकू विश्वकर्मा

**हिं**दी टेलीविजन और दिग्गज अभिनेता पंकज धीर का 15 अक्टूबर 2025 को 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे लंबे समय से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे, और हाल ही में उनकी तबीयत में गिरावट आई थी। उनका निधन मुंबई के विले पाले स्थित पवन हंस शमशान घाट में हुआ, जहां उनका अंतिम संस्कार शाम 4:30 बजे किया गया।

### महाभारत में कर्ण का किरदार

पंकज धीर को सर्वाधिक पहचान बी. आर. चोपड़ा की महाकाव्यात्मक टेलीविजन सीरीज 'महाभारत' में कर्ण के किरदार से मिली। इस भूमिका ने उन्हें घर-घर में पहचान दिलाई और वे भारतीय टेलीविजन के एक महत्वपूर्ण चेहरा बन गए। उनकी अभिनय क्षमता और कर्ण के किरदार में गहराई ने दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी।

### करियर की शुरुआत और संघर्ष

पंकज धीर ने अपने करियर की शुरुआत 1970 में फिल्म 'परवाना' से बतार सहायक निर्देशक की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्मों में छोटे-मोटे रोल किए, लेकिन उन्हें असली पहचान 1988 में आई 'महाभारत' से मिली। इस शो में कर्ण का किरदार निभाने से पहले उन्हें अर्जुन का रोल ऑफर हुआ था, लेकिन मूँछें न मुंडवाने की जिद के कारण उन्होंने वह भूमिका टुकरा दी। इसके बाद उन्हें कर्ण का रोल मिला, जिसे उन्होंने बख्बानी निभाया।

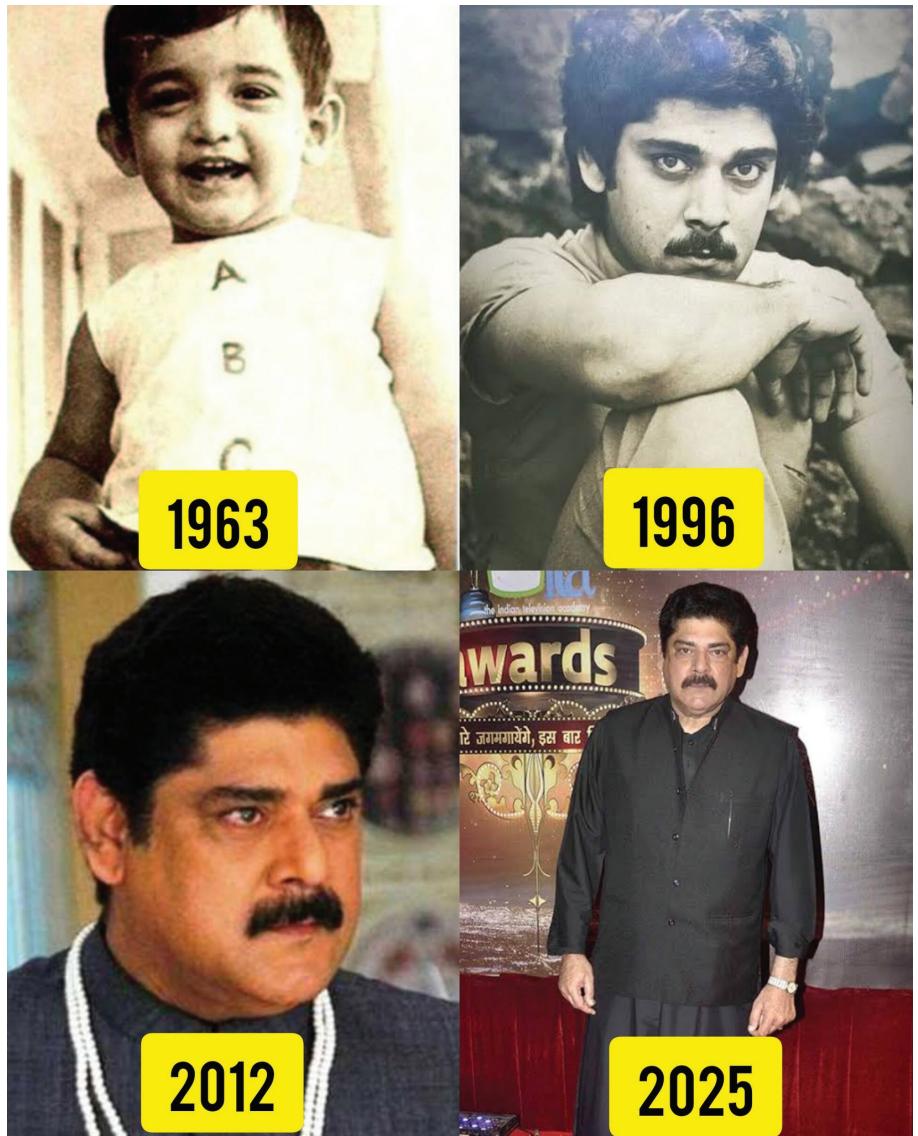
### पंकज धीर का व्यक्तिगत जीवन

पंकज धीर के पिता सी. ए. ल. धीर एक प्रसिद्ध निर्देशक

और निर्माता थे, जिन्होंने 60 और 70 के दशक में कई फिल्मों में काम किया। उनकी पत्नी अनीता धीर एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर थीं। उनके बेटे निकितन धीर भी एक अभिनेता हैं, जो फिल्म 'चेन्नई एक्सप्रेस' में अपने किरदार 'थंगाबली' के लिए प्रसिद्ध हैं। Nikitin की शादी टीवी अभिनेत्री कृतिका सेंगर से हुई है।

बता दें कि कृतिका सेंगर 'झांसी की रानी' और 'कसौटी जिंदगी की' जैसे कई धारावाहिकों में लीड रोल में नजर आ चुकी हैं। वहाँ निकितन 'रक्तांचल', 'नागर्जुनः एक योद्धा', 'इश्कबाज' और 'नागिन 3' जैसे कई शोज में नजर आए हैं। साल 2022 में निकितन और कृतिका एक बेटी के पैरेंट बने जिसका नाम उन्होंने देविका रखा है।

पंकज ने अपनी बहू को खुद अपने बेटे से मिलवाया था। चंद्रकांता के विष पुरुष 'शिवदत्त' की भूमिका निभा चुके पंकज के बेटे निकितन धीर पापा की तरह ही फिल्म और टीवी शोज में खूब नाम कमा रहे हैं। अपनी डील डॉल की वजह से उन्हें नेटिव रोल में लोगों ने काफी पसंद किया। 'थंगाबली' के रोल में दर्शकों ने उन्हें खूब पसंद किया। निकितन शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की 'चेन्नई एक्सप्रेस' में विलन के किरदार में दिखे थे। बेटे



को कृतिका से पंकज धीर ने ही मिलवाया था।

### पंकज धीर की अंतिम यात्रा

पंकज धीर के निधन से कुछ घंटे पहले उनके बेटे निकितन ने इंस्टाग्राम पर एक भावुक पोस्ट शेयर की थी, जिसमें उन्होंने जीवन के उत्तर-चङ्गाव को स्वीकारते हुए

भगवान शिव से शरण की बात कही थी। उनकी यह पोस्ट अब सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। पंकज धीर का निधन भारतीय टेलीविजन और सिनेमा जगत के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। उनकी अभिनय क्षमता और कर्ण के किरदार में गहराई ने उन्हें अमर बना दिया है। उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।

## लालू परिवार के गढ़ में जंग का नया मोड़ तेजस्वी की विरासत पर पीके की चुनौती

@ आनंद मीणा

### रा

घोपुर एक नाम, एक पहचान, एक गढ़। ये वह विधानसभा क्षेत्र है जहां आज भी राजनीति का रंग गहरा है, भावनाएँ तीखी हैं और जीत-हार की गूंज कई पीड़ियों से सुनाई देती है। इस बार जब प्रशांत किशोर की चुनाव से निकली एक चुनौती ने माहौल बदल दिया, तो हर ओर सवाल उठने लगे कि क्या राघोपुर में सत्ता की सितारियाँ फिर पलट जाएँगी?

### चुनावी बाजार में अचानक खींचतान

11 अक्टूबर, 2025 की सुबह में प्रशांत किशोर ने राघोपुर में कुछ ऐसा कह दिया, जिसने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी, “मेरे लड़ने की बात सुनकर तेजस्वी यादव दूसरी सीट लौटने लगे हैं। उनकी हालत भी राहुल गांधी की तरह होगी। यह राघोपुर उनका गढ़ है। उनके मां-बाप की सीट है। अगर उन्होंने राघोपुर छोड़कर कहीं और से लड़ा, तो इसका मतलब है कि उन्होंने हार स्वीकार कर ली।” ये सिर्फ बयान नहीं, चैलेंज था। उसने तेजस्वी को चुनौती दी कि असली हिम्मत दिखाओ यहाँ से चुनाव लड़कर दिखाओ। राजनीतिक पंडितों ने इसे गहरी रणनीति की शुरुआत माना।

पहले यह चर्चा थी कि प्रशांत किशोर खुद राघोपुर से मैदान में उत्तर सकते हैं और तेजस्वी को आमने-सामने टक्कर दे सकते हैं। लेकिन 15 अक्टूबर को उन्होंने एक अचानक मोड़ लिया उन्होंने कहा, “सभी पार्टी सदस्यों ने मिलकर तथ दिया है कि मुझे चुनाव नहीं लड़ना है। मेरा काम है कि सभी उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करूँ।” यह मोड़ राजनीतिक नारकीयता से कम नहीं था। उम्मीदवार घोषित हो चुके थे, प्रचार हो रहा था और अचानक मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा की घोषणा ने सबको चौंका दिया।

### लूट के लिए लड़ाई का आरोप और राजनीति की गरमाहट

प्रशांत किशोर ने एनडीए और महागठबंधन पर तीखा हमला बोला। उनके शब्द थे कि बिहार की जनता पहले से जानती है कि ये लोग लूट के लिए लड़ रहे हैं। जब आप यह सोचेंगे कि आप बिहार को कितना लूट सकते हैं, तो ऐसा होना तय है। उन्होंने कई सीटों पर अपने दावेदारों की संभावित जीत पर भरोसा जाताया और NDA की रणनीति पर कटाक्ष किया। उनका कहना था कि बदलाव की लड़ाई अब सत्ता के गढ़ों में भी लड़ी जाएगी। राघोपुर इस लड़ाई की शुरुआत बनने वाला है।

### लालू परिवार का वोट बैंक

राघोपुर का परिसर लालू परिवार की राजनीतिक विरासत और पहचान से बँधा है। इस क्षेत्र से लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी, और अब तेजस्वी यादव—तीनों ने चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की है। अब तेय है कि इस गढ़ को कौन संभालेगा। वहीं जो इस परिवार की राजनीति को चुनौती देगा या उसी सूरते हाल को आगे ले जाएगा यह सीट सिर्फ एक विधानसभा क्षेत्र नहीं; यह



भावनाओं, जातीय समीकरणों, और राजनीतिक पहचान की लड़ाई है। यादव वोटर, भूमिहार वोटर और पासवान वोटर ये तीनों समूह यहाँ राजनीतिक समीकरण तय करते हैं। करीब 30 प्रतिशत यादव वोटर यहाँ हैं। भूमिहार भी बड़ी संख्या में हैं। पासवान वोटर्स की भूमिका उस मतदाता को कहते हैं जिसे निर्णयक माना जाता है। 2020 के विधानसभा चुनाव में तेजस्वी यादव ने राघोपुर से 48,000 से अधिक वोटों के अंतर से जीत की थी। पिछले आठ चुनावों में से सात बार यह सीट राजद ने जीती है। इस समय तक कुल 19 चुनाव हो चुके हैं, इनमें से राजद सात बार, कांग्रेस तीन बार, जनता दल, जदयू, लोकदल आदि ने अपनी-अपनी जीत दर्ज की है।

### कौन किससे भिड़ेगा?

जब प्रशांत किशोर ने राघोपुर की चुनौती दी, तो राजनीतिक चश्मेबानों की निगाहें वहाँ टिक गईं। अगर वो खुद मैदान में उतरते, तो यह मुकाबला प्रतीकात्मक बन जाता यह केवल तेजस्वी से टकराव नहीं, लालू परिवार की विरासत से टकराव होता। लेकिन अब, जन सुराज ने राघोपुर से खुद किशोर को नहीं, बल्कि चंचल सिंह नामक व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया है। इस कदम ने राजद को राहत दी है, क्योंकि सीधे मुकाबले का माहौल टल गया है। तेजस्वी ने 15 अक्टूबर को यहाँ नामांकन दाखिल किया और स्पष्ट किया कि वो राघोपुर से ही चुनाव लड़ेंगे।



अभी भी विरोधी दल और विश्लेषक इस बदलाव को रणनीति पलटना कह रहे हैं। बीच में यह सवाल लटकता है क्या किशोर ने पीछे हटकर अपने हथियार छिपा लिए या यह उनकी राजनीति की अगली चाल है? राघोपुर का महत्व सिर्फ एक सीट तक सीमित नहीं है। यह बिहार की सत्ता और बदलाव की लड़ाई का प्रतीक बन चुका है। चूंकि यह पटना से लगभग 50 किलोमीटर

दूर है और वैशाली जिले में आता है, राजनीतिक दृष्टि से यह रणनीतिक रूप से अहम क्षेत्र माना जाता है। इस क्षेत्र का सामाजिक समीकरण है यादव, मुस्लिम और दलित। बीजेपी, राजद और अन्य दलों के लिए अहम गणित तैयार करता है। प्रशांत किशोर ने इस सीट से चुनाव प्रचार शुरू करने का ऐलान किया था, जिससे यह माना गया कि यह उनका प्रतीकात्मक मुकाबला हो सकता है। चुनावी रणनीति की दुनिया में यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दिखाता है कि राजनीति सिर्फ सीटों की लड़ाई नहीं, संदेश की लड़ाई भी है। कभी-कभी मैदान पर कदम न बढ़ाना भी राजनीतिक चाल हो सकती है।

### बदलाव की इस लड़ाई में कौन जीतेगा?

राघोपुर इस समय एक सांकेतिक युद्धस्थल बन चुकी है। तेजस्वी यादव इसे अपने परिवार की विरासत मानते हैं, वहाँ प्रशांत किशोर ने इसे अपनी चुनौती बनाया। उनका कदम पीछे हटना, नामांकन वापस लेना सब इस राजनीतिक कहानी के मोड़ हैं। लोग कहेंगे कि यहाँ से प्रचार शुरू करना, चैलेंज देना, या खुद उतरना यह सब सिर्फ राजनीतिक थियेटर था। लेकिन जनता वहीं निर्णय करेगी जो भावनाओं और गणित के बीच संतुलन बना सके।

# दीवाली-छठ की यात्रा: ट्रेनों की नई उम्मीद

**भा**रत में दीवाली और छठ पूजा के समय घर लौटने की चाहत हर किसी के दिल में बस जाती है। परिवार से मिलने का मौका, मिठाइयों की खुशबू और शाम की पूजा-अर्चना—ये सब कुछ त्योहारों की रैनक बढ़ाते हैं। लेकिन हर साल लाखों लोग ट्रेनों की भिड़भिड़ाहट से जूझते हैं। इस बार कुछ अलग है। मोदी सरकार ने कैबिनेट बैठक में फैसला लिया है कि दीवाली और छठ के लिए बारह हजार स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। ये ट्रेनें एक अक्टूबर से पंद्रह नवंबर तक चलेंगी, ताकि करोड़ों यात्री बिना ज्यादा परेशानी के घर पहुंच सकें। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि ये संख्या पिछले साल से कहीं ज्यादा है। आखिर ये कदम क्यों जरूरी है? क्या ये सिर्फ यात्रा आसान करेगा या त्योहारों की अर्थव्यवस्था को भी नई गति देगा? आइए, इसकी गहराई में उतरें। ये पहले न सिर्फ यात्रियों की सुविधा का इशारा है, बल्कि महामारी के बाद की जिंदगी में सामान्यता लौटाने का भी संकेत देती है।

## बारह हजार ट्रेनें: योजना का सरल खाका

सबसे पहले समझें कि ये बारह हजार स्पेशल ट्रेनें आखिर हैं क्या। ये कोई साधारण ट्रेनें नहीं, बल्कि खास त्योहारी यात्रा के लिए तैयार की गई सेवाएं हैं। एक ट्रेन कई चक्रकर लगा सकती है, इसलिए ये बारह हजार 'सेवाओं' या 'ट्रिप्स' का मतलब है। रेलवे ने अभी तक दस हजार ट्रेनों की सूचना जारी कर दी है। इनमें एक सौ पचास ट्रेनें बिना रिजर्वेशन वाली होंगी, जो आखिरी मिनट में अने वाले यात्रियों के लिए तैयार रखी गई हैं। रेल मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि ये ट्रेनें एक अक्टूबर से शुरू हो चुकी हैं और नवंबर के मध्य तक चलेंगी। सबसे ज्यादा भीड़ अक्टूबर के बीच से नवंबर के दूसरे हफ्ते तक रहेंगी, जब दीवाली की रोशनी और छठ की अरध्या का समय नजदीक आएगा।

पिछले साल रेलवे ने सात हजार सात सौ चौबीस ऐसी सेवाएं चलाई थीं। इस बार संख्या दोगुनी से ज्यादा हो गई है। क्यों? क्योंकि यात्रियों की संख्या बढ़ रही है। अनुमान है कि ये ट्रेनें करोड़ों लोगों को ले जाएंगी। खास तौर पर उत्तर प्रदेश और बिहार के रूट्स पर फोकस है, जहां से मुंबई, दिल्ली जैसे शहरों में काम करने वाले लोग घर लौटते हैं। उदाहरण के लिए, गोरखपुर, वाराणसी, भागलपुर जैसे स्टेशनों से स्पेशल ट्रेनें चल रही हैं। रेलवे ने ट्रैक बढ़ाने, कोच बनाने और इंजन उत्पादन में तेजी लाइ है, जिससे ये संभव हुआ। लेकिन सवाल ये भी है—क्या इतनी ट्रेनें पर्याप्त होंगी? कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि भीड़ अभी भी एक चुनौती रहेगी, लेकिन ये कदम कम से कम विकल्प तो दे रहा है। सरकारी स्तर पर ये फैसला मोदी कैबिनेट की बैठक में लिया गया, जो यात्रियों को एक तरह का 'त्योहारी तोहफा' है। ये न सिर्फ सुविधा देता है, बल्कि रेलवे की क्षमता पर भरोसा जगाता है। सोचिए, अगर ये ट्रेनें न चलें तो कितने परिवार अलग रह जाएं—ये योजना उसी दर्द को कम करने की कोशिश है।

अब बात करें तो इन ट्रेनों की बुकिंग की। आरक्षित ट्रेनों के लिए आईआरसीटीसी की वेबसाइट या ऐप से टिकट ले सकते हैं। बिना आरक्षित वाली ट्रेनों के लिए स्टेशन पर या यूटिएस ऐप से। रेलवे ने सलाह दी है कि जल्दी बुक करें, क्योंकि पीक टाइम में सीटें तेजी से भर जाती हैं। इसके अलावा, रेलवे ने पंक्तुअलिटी पर जोर



दिया है। सतर डिवीजनों में से उनतीस में नब्बे प्रतिशत से ऊपर समय पर ट्रेनें पहुंच रही हैं। ये छोटी-छोटी बातें यात्रियों के लिए बड़ी राहत हैं। लेकिन क्या ये सब बिना किसी कमी के हो पा रहा है? कुछ रिपोर्ट्स कहती हैं कि स्टाफ की कमी या रखरखाव की समस्या अभी बाकी है। फिर भी, ये योजना एक सकारात्मक कदम है, जो दिखाती है कि सरकार त्योहारों को सिर्फ छुट्टी नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी का हिस्सा मानती है।

## सेंट्रल रेलवे: मुंबईवालों की लोकल मदद

मुंबई जैसे शहर में जहां रोज लाखों लोग ट्रेनों पर सफर करते हैं, वहां त्योहारी भीड़ अलग ही सिरदर्द बन जाती है। सेंट्रल रेलवे ने इस बार तीस अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें चलाने का ऐलान किया है। ये ट्रेनें दीवाली और छठ के लिए खासतौर पर तैयार की गई हैं, ताकि मुंबई से गोवा या कोकण क्षेत्र जाने वाले लोग आसानी से पहुंच सकें। इसमें से छह ट्रेनें आरक्षित हैं, जो लोकमान्य तिलक टर्मिनस से मडगांव तक चलेंगी। बाकी चौबीस अनारक्षित हैं, जो पनवेल से चिपड़ूण के बीच वीकेंड पर दौड़ेंगी।

पहले वाली ट्रेनों की बात करें—ट्रेन नंबर 01003 लोकमान्य तिलक टर्मिनस से मडगांव के लिए सोमवार को सुबह आठ बजकर बीस मिनट पर छूटी और शाम आठ बजकर चालीस मिनट पर पहुंचेगी। ये अक्टूबर के छह, तेरह और बीस तारीख को चलेंगी। वापसी की ट्रेन 01004 मडगांव से रविवार को चार बजकर तीस मिनट पर निकलेगी और अगले दिन सुबह छह बजकर बीस मिनट पर मुंबई पहुंचेगी। ठाणे, पनवेल, पेन, रोहा जैसे स्टेशन रुकेंगी। कोच में एक ऐसी टूटियर, तीन ऐसी श्री टियर, आठ स्लीपर और चार जनरल क्लास हैं। बुकिंग चार अक्टूबर से शुरू हो चुकी है।

दूसरी तरफ, अनारक्षित ट्रेनें 01159 पनवेल से चिपड़ूण के लिए शुक्रवार, शनिवार, रविवार को चार बजकर चालीस मिनट पर चलेंगी और शाम नौ बजकर

पचपन मिनट पर पहुंचेंगी। ये अक्टूबर के तीन से छब्बीस तक चलेंगी। वापसी 01160 सुबह ग्यारह बजकर पांच मिनट पर चिपड़ूण से पनवेल पहुंचेगी। सोमापाने, आठा, जिते जैसे छोटे स्टेशनों पर रुकेंगी। ये आठ एमईएमयू कोच वाली हैं। टिकट स्टेशन या ऐप से मिलेगा।

ये तीस ट्रेनें हजारों यात्रियों को फायदा पहुंचाएंगी। लेकिन पहले खबर आई थी कि बीस ट्रेनें चलेंगी, फिर साठ का ऐलान—ये बदलाव दिखाते हैं कि रेलवे यात्रियों की फीडबैक सुन रहा है। मुंबई के लोकल ट्रेन पैसेंजर्स के लिए ये राहत है, क्योंकि कोकण रूट पर हमेशा भीड़ रहती है। क्या ये पर्याप्त है? शायद नहीं, लेकिन ये शुरुआत है। सोचिए, एक फैमिली जो गोवा घूमने जाना चाहती है, अब बिना घंटों इंतजार के ट्रेन पकड़ सकती है। ये छोटी मदद बड़ी खुशी लाती है।

## यात्रियों की कहानी: घर पहुंचने का सपना

अब बात करें उन लोगों की, जो इन ट्रेनों का इंतजार कर रहे हैं। रामू नाम का एक मजदूर मुंबई में रहता है। बिहार के गांव से आया है, और हर दीवाली पर घर लौटना चाहता है। पिछले साल टिकट न मिलने पर बस से गया था, जो थकान भरा सफर था। इस बार स्पेशल ट्रेन से घर पहुंचेगा, मां के हाथ की मिठाई खाएगा। ऐसे लाखों रामू हैं, जिनके लिए ये ट्रेनें सिर्फ वाहन नहीं, बल्कि भावनाओं का पुल हैं।

लेकिन सब कुछ आसान नहीं। कुछ यात्री बताते हैं कि स्टेशनों पर अभी भी भीड़ है। आरक्षित टिकट मिलना मुश्किल, और अनारक्षित में खड़े होकर सफर। रेलवे ने हेल्पलाइन नंबर दिए हैं—1398 पर कॉल करें। इसके अलावा, वेटिंग रूम, पानी की व्यवस्था पर काम चल रहा है। एक तरफ खुशी है कि ट्रेनें बढ़ीं, दूसरी तरफ सवाल कि क्या सफाई और सुरक्षा पर भी उतना ध्यान है? महामारी के बाद लोग सतर्क हैं, इसलिए मास्क और सैनिटाइजेशन जरूरी।

महिलाओं और बच्चों के लिए खास सुविधा की बात करें तो रेलवे ने लेडीज कोच बढ़ाए हैं। बुजुर्गों के लिए व्हीलचेयर मदद। ये छोटे कदम यात्रा को सहज बनाते हैं। एक सर्वे कहता है कि त्योहारी समय में सतर प्रतिशत यात्री परिवार के साथ जाते हैं। इसलिए ये ट्रेनें न सिर्फ ले जाती हैं, बल्कि यादें जोड़ती हैं। लेकिन विचार करने वाली बात ये है—क्या शहरों से गांवों की दूरी कम हो रही है, या बढ़ रही है? ये ट्रेनें शायद उस गैप को भरने में मदद करेंगी।

## त्योहारों का बड़ा चक्र: अर्थव्यवस्था और अविष्य

दीवाली-छठ सिर्फ पूजा-पाठ नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था का बड़ा इंजन है। ये ट्रेनें चलने से घरेलू पर्यटन बढ़ेगा। लोग गांव लौटेंगे, तो बाजारों में खरीदारी होगी—साड़ियां, मिठाई, पटाखे। अनुमान है कि त्योहारों से अरबों का कारोबार होगा। छोटे व्यापारी, होटल, ट्रांसपोर्ट सबको फायदा। महामारी के बाद ये रिकवरी का समय है, जहां लोग फिर से घूमना-फिरना चाहते हैं।

लेकिन संतुलन देखें। पर्यावरण की बात करें तो इनी ट्रेनें ईंधन खपत बढ़ाएंगी। रेलवे इलेक्ट्रिक ट्रेनों पर शिफ्ट हो रहा है, जो अच्छा है। दूसरी तरफ, ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। बिहार-यूपी में छठ के मेले लाखों को रोजगार देंगे। ये ट्रेनें न सिर्फ ले जाती हैं, बल्कि सामाजिक बंधन मजबूत करती हैं। परिवार मिलेंगे, तो तनाव कम होगा, खुशियां बांटेंगे।

भविष्य में क्या? रेलवे कहता है कि हर साल ट्रैक बढ़ा रहा है—चार हजार किलोमीटर सालाना। अगर ये रफ्तार बनी रही, तो अगले साल और बेहतर होगा। लेकिन हमें सोचना होगा—क्या सरकार सिर्फ ट्रेनें बढ़ाए या सड़क, हवाई यात्रा पर भी ध्यान दे? ये पहले एक संकेत है कि छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। दीवाली की रोशनी की तरह, ये ट्रेनें उम्मीद की किरण हैं। आखिरकार, त्योहार तो आते-जाते रहेंगे, लेकिन घर पहुंचना हमेशा खास रहेगा।

सोमवार, 13 अक्टूबर 2025, विक्रम संवत् 2080

## हरियाणा के दो आत्महत्या कांडों के पीछे की सच्चाई

**मैं** ने यहले भी नपेतुले शब्दों में लिखा था की हरियाणा में आईपीएस पूरण कुमार की आत्महत्या का संबंध कहीं ना कहीं भष्टाचार से जुड़ा हो सकता है। आईपीएस पूरण कुमार की पल्ली हरियाणा में ही वरिष्ठ आईएस है उनके साले हरियाणा में विधायक हैं अब्य कई रिश्तेदार भी उच्च पदों पर हैं। यही कारण था कि पूरण कुमार मनमानी करते थे। आज जिस तरह संदीय कुमार एसआई ने आत्महत्या की है और जिस प्रकार के आरोप लगाए हैं वे आरोप तो अत्यंत ही सनसनीखेज हैं। इन आरोपों के माध्यम से तो उनकी पल्ली भी संकट में आ सकती है। आईपीएस आत्महत्या बनाम एसआई आत्महत्या अब बाहर राज खोलेगी। मैं लंबे समय से महसूस करता हूं की दलित होने के नाम पर पूरे देश में कुछ मुद्दों भर दलित पूरे समाज को ब्लैकमेल कर रहे हैं। अभी-अभी आपने देखा होगा की विराग पासवान सिर्फ एक दलित होने के कारण ही इतना ब्लैकमेल कर पा रहे हैं अब्यथा विराग पासवान के पास कोई योग्यता नहीं है लेकिन सारा हिंदुस्तान ले लेना चाहते हैं। अभी पता चला कि हरियाणा में दलितों की एक वर्ण यंचायत नुई इस तरह दलितों के नाम पर यदि ब्लैकमेल किया जा रहा है तो अब पूरा राज खोलने चाहिए। आईपीएस बनाम एसआई की आत्महत्या अवश्य ही कोई नया संदेश देगी।

बजरंग मुनि

## सोना नहीं, अब चांदी है नई चमक

@ अनुराग पाठक

सो

ने की परंपरागत चमक के बीच इस साल एक और धातु नहीं सबको चाँदी किया है वो है चांदी। कुछ ही महीनों में चांदी के दाम दोगुने से ज्यादा बढ़कर 1.75 लाख रुपये प्रति किलो तक पहुंच गए हैं। यह सिर्फ एक कमोडिटी का उछाल नहीं, बल्कि एक आर्थिक और औद्योगिक कहानी है जो बदलते समय का संकेत देती है। इतिहास में चांदी ने कभी इतनी तेजी नहीं दिखाई थी। इस बार उसने सोने को भी पछाड़ दिया है, 37% ज्यादा रिटर्न देकर। निवेश बाजार से लेकर आम लोगों तक, हर कोई यही पूछ रहा है कि आखिर चांदी में ऐसा क्या हो गया कि उसने कुछ ही महीनों में सोने को पीछे छोड़ दिया।

धनतेरस और दिवाली जैसे त्योहारी मौसम में भारत में चांदी खरीदने की परंपरा पुरानी है। लोग गहने, सिक्के, बर्तन या अन्य शुभ प्रतीक के रूप में चांदी खरीदना पर्संद करते हैं। लेकिन इस बार तस्वीर कुछ अलग है। त्योहार से पहले ही ज्वेलरी बाजारों और बुलियन ट्रेडिंग में ऐसी हलचल देखने को मिली जो पहले कभी नहीं देखी गई थी। कई जगह तो चांदी ब्लैक में बिकने लगी। डिमांड इतनी तेजी से बढ़ी कि सप्लाई पीछे रह गई, और परिणामस्वरूप दामों में ऐतिहासिक उछाल देखने को मिला। यह सिर्फ भावनात्मक खरीदारी का मामला नहीं रहा, बल्कि एक आर्थिक संकेत है कि भारत और दुनिया दोनों में चांदी की उपयोगिता अब नई दिशा में बढ़ रही है।

चांदी की बढ़ती मांग की कई वजहें हैं। पहले यह धातु मुख्यतः आभूषणों और धार्मिक वस्तुओं में उपयोग होती थी, लेकिन अब इसका रोल पूरी तरह बदल गया है। 21वीं सदी में चांदी एक औद्योगिक मेटल के रूप में उभरी है। सोलर पैनलों में इसका इस्तेमाल लगातार बढ़ रहा है क्योंकि यह बिजली का उत्कृष्ट संवाहक (conductor) है। आज हर आधुनिक सोलर सेल में चांदी का प्रयोग होता है। वैश्विक स्तर पर ग्रीन एनर्जी की दिशा में बढ़ती हुई रफ्तार ने इस धातु की डिमांड को अभूतपूर्व बना दिया है। इलेक्ट्रिक व्हीकल्स में भी चांदी का प्रयोग बढ़ रहा है, क्योंकि यह वाहनों के इलेक्ट्रॉनिक सर्किट और बैटरी कनेक्शन में अहम भूमिका निभाती है। इतना ही नहीं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हाई-टेक नियमित निर्माण में भी चांदी एक जरूरी धातु बनती जा रही है।

अमेरिका ने तो इसे अब 'क्रिटिकल मिनरल्स' की सूची में डालने की योजना बना ली है। इसका मतलब यह है कि आने वाले वर्षों में चांदी को रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे तेल या लिथियम को। अमेरिकी ड्राफ्ट रिपोर्ट में यह साफ लिखा गया है कि आने वाले दशक में चांदी ऊर्जा, रक्षा और तकनीक तीनों सेक्टर के लिए जरूरी धातु बन जाएगी। जब

किसी धातु को एक वैश्विक महाशक्ति क्रिटिकल धोषित करने की सोचती है, तो यह केवल कीमत बढ़ने का संकेत नहीं होता, बल्कि उसके रणनीतिक मूल्य का भी इशारा होता है।

दूसरी ओर, दुनिया में चांदी की सप्लाई सीमित होती जा रही है। कई देशों में खदानों पर पर्यावरणीय प्रतिबंध बढ़ गए हैं। दक्षिण अमेरिका, मैक्सिको और चीन जैसे देशों में उत्पादन घटा है। भारत में तो वैसे भी चांदी की खुदाई बहुत सीमित है और हम इसका अधिकांश हिस्सा आयात करते हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि दुनिया की लगभग 70% चांदी कॉपर और जिंक जैसी अन्य धातुओं की खुदाई के दौरान बायप्रोडक्ट के रूप में निकलती है। यानी जब तक तांबा और जिंक की माइनिंग नहीं बढ़ेगी, चांदी की सप्लाई अपने आप नहीं बढ़ सकती। इस तरह मांग और आपूर्ति के बीच जो भारी अंतर बना हुआ है, वही कीमतों को ऊपर खींच रहा है। यह आर्थिक सिद्धांत का सबसे सीधा उदाहरण है scarcity leads to value, यानी कमी बढ़ेगी तो कीमत भी बढ़ेगी।

निवेश के नजरिए से भी चांदी इस समय चर्चा में है। बीते साल से लेकर अब तक इसमें लगभग 100% रिटर्न मिला है। बाजार के विशेषज्ञों का कहना है कि यह केवल एक अस्थायी उछाल नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक ट्रेंड की शुरुआत है। अँगमेंट कंपनी की रिसर्च हेड रेनेशा चेनानी का कहना है कि अमेरिका में व्याज दरों में कटौती, संभावित शट्टाउन और बढ़ते टैरिफ से निवेशकों का रुकान चांदी की ओर बढ़ा है। उनके अनुसार, लंबी अवधि में चांदी में तेजी बनी रह सकती है, लेकिन फिलहाल रिकॉर्ड हाई स्तर पर नई खरीदारी से बचना चाहिए। वहीं केडिया कमोडिटी के डायरेक्टर अजय केडिया का मानना है कि चांदी ने भले ही 100% का गेन दिखाया हो, पर लॉन्ग टर्म में यह सोने की तुलना में ज्यादा तेजी दिखा सकती है। HDFC सिक्योरिटीज के हेड अनुज गुप्ता के मुताबिक चांदी अभी भी सोने के मुकाबले अंडरवैल्यूड है। इंडस्ट्रियल डिमांड इसके दामों को सपोर्ट कर रही है, और गिरावट के दौर में इसमें निवेश बेहतर रहेगा।

यानी स्थिति सात है कि शॉर्ट टर्म में सावधानी, लॉन्ग टर्म में संभावना। अगर किसी निवेशक के पास पर्याप्त पूँजी है और वह इसे कुछ सालों के लिए पार्क कर सकता है, तो चांदी एक मजबूत विकल्प बन सकती है। लेकिन यह भी समझना जरूरी है कि चांदी की कीमतों सोने की तुलना में ज्यादा अस्थिर रहती है। इसमें गिरावट भी तेज होती है और उछाल भी अचानक आता है। इसलिए निवेश सोच-समझकर और चरणबद्ध तरीके से करना बेहतर रहेगा। भारत में निवेश के तीन प्रमुख रास्ते हैं। फिजिकल सिल्वर, सिल्वर ETF और सिल्वर फ्यूचर्स। फिजिकल सिल्वर सबसे पारंपरिक तरीका है, लेकिन इसमें चोरी या शुद्धता का रिस्क रहता है।

## जुबानी तीर

“

यह सिर्फ एक परिवार का मामला नहीं है, यह पूरे दलित समुदाय का सवाल है। यह मामला जाति-आधारित प्रताङ्गन से जोड़कर देखा जाना चाहिए। ये घटना दिखाती हैं कि सरकार की न्याय दिलाने की क्षमता कितनी कमज़ोर है।

राहुल गांधी (कांग्रेस नेता)

“

जांच निष्पक्ष होनी चाहिए, लीपापोती नहीं होनी चाहिए, अगर लीपापोती हुई तो बर्दाशत नहीं की जाएगी।

अभय  
सिंह चौटाला  
(इनेलो)

“

दोषी चाहे कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो, उसे बख्शा नहीं जाएगा। सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि जांच निष्पक्ष और पारदर्शी हो। सरकार हर पहलू को गंभीरता से देख रही है और कार्रवाई समय से की जाएगी।

नैयब सिंह सैनी (मुख्यमंत्री, भाजपा)



# गठियाबंधः जोड़ों के दर्द से मुक्ति की राह आयुर्वेद के साथ

**क**भी किसी बुजुर्ग को चलते हुए घुटनों को सहलाते देखा होगा, या किसी कामकाजी महिला को हाथों की उंगलियां मरोड़ते हुए। अक्सर वे कहते हैं “घुटने में जकड़न है”, “उठने-बैठने में दर्द होता है”, हाथ अकड़ जाते हैं।

यही दर्द धीरे-धीरे गठियाबंध यानी आर्थराइटिस (Arthritis) का रूप ले लेता है। भारत में हर तीसरे बुजुर्ग को जोड़ों का दर्द किसी न किसी रूप में सताता है। पर सच यह है कि गठिया सिर्फ उम्र की बीमारी नहीं, बल्कि आज के तनाव, खानपान और जीवनशैली से जुड़ी समस्या भी बन चुकी है।

आयुर्वेद कहता है जहाँ वात का असंतुलन होगा, वहाँ दर्द होगा। और गठिया उसी वात असंतुलन का परिणाम है।

## क्या है गठियाबंध (Arthritis)?

आम भाषा में कहें तो यह जोड़ों की बीमारी है। शरीर के जो हिस्से एक-दूसरे से जुड़कर चलने की ताकत देते हैं — जैसे घुटने, कोहनी, उंगलियां, कंधे — वहाँ सूज जाते हैं, दर्द करते हैं या अकड़ जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इसे Arthritis कहता है, और इसके दो प्रमुख रूप हैं:

1. ऑस्टियोआर्थराइटिस (Osteoarthritis) — इसमें जोड़ों की हड्डियों के बीच की परत घिस जाती है, जिससे हड्डियाँ एक-दूसरे से रगड़ खाने लगती हैं।

2. रूमेटॉइड आर्थराइटिस (Rheumatoid Arthritis) — यह एक Autoimmune Disease है, जिसमें शरीर की इम्यून सिस्टम खुद अपने जोड़ों पर हमला करने लगती है।

दोनों ही स्थितियाँ बेहद दर्दनाक होती हैं। सुबह उठते ही उंगलियाँ सूज जाना, घुटनों में चटक आवाज़ आना, या अचानक जोड़ों में जकड़न महसूस होना, ये इसके शुरुआती लक्षण हैं।

## आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से गठिया

आयुर्वेद में इस रोग को आमवात कहा गया है। आम यानी शरीर में अपच से बनी विषैली चीजें, और “वात” यानी हवा तत्व का दोष जब शरीर में जरागिन (पाचन शक्ति) कमजोर पड़ जाती है, तो अधपचा भोजन आम बनकर रक्त और जोड़ों में जमा हो जाता है। यहीं “आम” वात दोष को बढ़ाता है और जोड़ों में सूजन, दर्द और कठोरता लाता है।

आयुर्वेद का सिद्धांत साफ़ है कि आम का नाश करो, वात को शांत करो, और शरीर की अग्नि को प्रज्वलित रखो।

## गठियाबंध के मुख्य कारण

तैलीय, भारी और ठंडी चीजों का अत्यधिक सेवन लंबे समय तक बैठे रहना, शारीरिक श्रम की कमी मानसिक तनाव और नींद की कमी अपच और कब्ज़ असर समय में पर्याप्त गरमी का अभाव



अत्यधिक दूध या दही का सेवन बिना पाचन के अनुसार

गठिया के आयुर्वेदिक इलाज की तीन मुख्य दिशाएं

### 1. शुद्धीकरण (Detoxification) — शरीर से आम और विष बाहर निकालना

आयुर्वेद में इसे पंचकर्म कहा गया है।

इसमें पांच प्रमुख विधियाँ होती हैं — वर्मन, विरेचन, बस्ती, नस्य और रक्तमोक्षण गठिया में सबसे उपयोगी मानी जाती है बस्ती चिकित्सा — यानी औषधीय तेल या काढ़े की एनिमा थेरेपी, जो वात दोष को शांत करती है और जोड़ों की सूजन घटाती है।

इसके अलावा अथंग (तेल मलिश) और स्वेदन (भाप स्नान) से शरीर के विष बाहर निकलते हैं और दर्द में आराम मिलता है।

### 2. औषधीय उपचार (Herbal Treatment)

आयुर्वेदिक ग्रंथों में कई ऐसी जड़ी-बूटियों का उल्लेख है जो गठिया में रामबाण असर करती हैं:

गुग्गुल (Commiphora mukul): यह सूजन कम करती है और जोड़ों को मजबूत बनाती है।

शश्वर्गांधा: शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है

और दर्द से राहत देती है।

रास्ना: वात को शांत करती है और जोड़ों की गतिशीलता बढ़ाती है।

शल्लकी (Boswellia serrata): आधुनिक शोध में भी यह सूजन कम करने में प्रभावी पाई गई है।

दशमूल: दस जड़ों का यह संयोजन शरीर में वात-संतुलन बनाकर दर्द कम करता है।

इनके अलावा गुग्गुल टैबलेट, योगराज गुग्गुल, सिंधुवासव, महायोगराज गुग्गुल जैसी दवाइयाँ आयुर्वेदिक चिकित्सक सलाह से ली जा सकती हैं।

### 3. आहार और दिनचर्या

गठिया के रोगी के लिए “खानपान ही दवा” है।

आयुर्वेदिक उपचार तभी प्रभावी होता है जब रोगी अपना आहार-संयम रखे।

सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीना।

आहार में हल्दी, अदरक, मेथी, लहसुन और अजवाइन शामिल करें।

ठंडी, तली-भुनी और भारी चीजें न खाएं।

दही, ठंडा दूध और जंक फूड से परहेज़ करें।

मूँग की दाल, हरी सब्जियाँ और सूप का सेवन बढ़ाएं।

कब्ज़ न हो इसके लिए रात में त्रिफला चूर्ण ले

सकते हैं।

रोजाना हल्की सैर या योगासन जैसे ताड़ासन, त्रिकोणासन, पवनमुक्तासन करें।

## घरेलू गुरुस्थे

1. मेथी दाना और हल्दी:

एक चम्मच मेथी दाना रात में भिगोकर सुबह चबाएं हल्दी वाला दूध पीना सूजन और दर्द दोनों में फायदेमंद है।

2. अजवाइन का पानी:

अजवाइन को पानी में उबालकर दिन में दो बार पीने से वात कम होता है।

3. सरसों तेल से मालिश:

हल्का गुनगुना सरसों या तिल का तेल जोड़ों पर लगाने से रक्त संचार बढ़ता है और जकड़न कम होती है।

4. गिलोय का रस:

यह प्राकृतिक इम्यून बूस्टर है, जो गठिया में राहत देता है।

## आधुनिक और आयुर्वेद का मेल

आज कई बड़े आयुर्वेदिक संस्थान जैसे केरल पंचकर्म केंद्र, आचार्य बालकृष्ण की पतंजलि रिसर्च, और कैरली आयुर्वेद ग्राम में आधुनिक तकनीक के साथ पारंपरिक इलाज को जोड़ा जा रहा है।

MRI और ब्लड रिपोर्ट से रोग का स्तर जानकर, उसी के अनुसार पंचकर्म और औषधीय चिकित्सा दी जाती है। इससे न केवल दर्द कम होता है, बल्कि रोग की जड़ पर असर होता है। यानी जोड़ों का क्षय रुकता है और शरीर फिर से सक्रिय बनता है।

## गठिया से बचाव ही सबसे बड़ा इलाज

आयुर्वेद कहता है कि सम्यक आहार, सम्यक विहार, और सम्यक विचार यही आरोग्य के तीन संभंध हैं।

अगर हम संतुलित जीवन जीना सीख ले

सुबह सूरज की रोशनी में चलें,

खानपान में सादगी रखें,

तनाव कम करें

तो गठिया जैसी बीमारियाँ हमारे शरीर से दूर रह सकती हैं।

## आयुर्वेद शरीर को भीतर से ठीक करता है

गठियाबंध कोई साधारण रोग नहीं है — यह शरीर के संतुलन और जीवनशैली दोनों का आईना है। जिन दवाओं से कुछ समय की राहत मिलती है, वहीं आयुर्वेद शरीर को भीतर से ठीक करता है। यह केवल दर्द मिटाने की चिकित्सा नहीं, बल्कि जीवन को फिर से गति देने का विज्ञान है।

आयुर्वेद हमें सिखाता है कि रोग से लड़े नहीं, उसे समझो और संतुलन बनाओ। गठिया का दर्द चाहे जितना पुराना क्यों न हो, अगर सही जड़ी-बूटी, पंचकर्म, और आहार का पालन किया जाए, तो राहत मिलना संभव है।

# बाबा कीनाराम जी: अवधूत संत की अमर लीला

## अवधूत संत का दिव्य स्वरूप

**ज**ब हम सच्चे संतों की बात करते हैं, तो मन में एक ऐसी छवि उभरती है जहाँ सत् और असत् के भेद से परे, परम आनंद में लीन होकर आत्मा का चिंतन होता है। चिंत की वृत्तियों को रोककर, उस अपार सागर में रम जाना ही अवधूत का सच्चा रूप है। ऐसे संत के लिए जगत के गुण-अवगुण सब आत्मा के ही रूप हो जाते हैं। वे प्रिय-अप्रिय के बंधनों से मुक्त होकर आत्मज्ञान में स्थिर रहते हैं। ठीक ऐसे ही थे हमारे पूज्य बाबा कीनाराम जी, जो सिद्ध अंदर संत थे। वे आत्मज्ञान में रमने वाले परम विरक्त महात्मा थे। उनकी एक जगह कही बात सुनकर दिल भर आता है कि मैं ही देवालय हूँ, देवता हूँ, पूजा हूँ और पूजारी हूँ। मैंने ही वृद्धावन में कृष्ण रूप में गोपी और ग्वालों के साथ नृत्य किया। मैंने ही हनुमान बनकर राम जी का हित साधा। ये शब्द उनकी एकरसता और एकात्मबोध की गहराई दिखाते हैं, जैसे सारा जगत एक ही परमात्मा का प्रतिबिंब हो। बाबा कीनाराम जी निर्मल, उपाधिहित, निरंजन चिन्मय सत्य के उपासक थे। संत कबीर की वाणी और विचारों का उन पर गहरा असर पड़ा था। वे खरा सत्य खुद में परिपूर्ण हैं, लेकिन बताने वाले उसे अलग और अप्रकट बताते हैं। उनकी एक उक्ति है: “अहिं अथा डगर बतावत, वहिं वहिरा वानी। ‘रामकिना’ सत्पुरु सेवा विनु, भूलि मरयो अज्ञानी।” ये शब्द सुनकर जीव की अज्ञानता पर दया आती है और गुरु भक्ति की महिमा समझ आती है। बाबा कीनाराम जी पहुंचे हुए संत थे, उनकी सिद्धि उच्च कोटि की थी। उनके जीवन की हर घटना परमात्मा की कृपा की झलक दिखाती है, जो हमें भक्ति के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है।

### जन्म और बाल्यकाल की दिव्यता

बाबा कीनाराम जी का जन्म काशी के निकट चंदौली मंडल में, वाणगंगा नदी के तट पर रामगढ़ गांव में हुआ था। सम्वत् 1684 के चैत मास में उन्होंने अवतार लिया। उनके पिता अकबरसिंह बड़े सुशील गृहस्थ थे। उन्होंने अपने पुत्र का पालन-पोषण बड़े प्यार से किया। शिक्षादीक्षा की भी पूरी व्यवस्था की। कीनाराम जी तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। परिवार की सारी आशाएं उन पर टिकी थीं। माता-पिता सोचते थे कि बड़ा होकर कीनाराम घर संभाल लेंगे। लेकिन बाबा तो सारे जगत के माता-पिता के घर को आत्मज्ञान के प्रकाश से रोशन करने आए थे। बचपन से ही उनमें आध्यात्मिकता का सहज आकर्षण था। वे जन्मजात संत थे। अल्पावस्था में भी वे अपने साथियों से राम नाम का उच्चारण करवाते थे। राम नामामृत कान में पड़ते ही प्रसन्नता से नाच उठते थे। ये बाल लीला देखकर लगता है कि परमात्मा खुद उनके रूप में खेल रहे थे। जब वे छोटे थे, तभी उनका विवाह कर दिया गया। लगभग तेरह साल की उम्र में गौने की तिथि तय हुई। नाच-गाने की तैयारी होने लगी। घर में आनंद मनाया जाने लगा। निकट के सो-संबंधियों को निर्मिति किया गया। लेकिन एक दिन पहले बारात की तैयारी देखकर मां से कीनाराम जी ने कहा कि मैं दूध-भात खाना चाहता हूँ। मां ने समझा



कि शुभ अवसर पर दूध-भात खाना निषेध है, गौने के समय ऐसा अमंगल भोजन मांगना अनुचित है। लेकिन कीनाराम जी ने हठ किया और दूध-भात खाकर ही सांस ली। आगे दिन बारात जाने ही वाली थी कि ससुराल से खबर आई कि वधू का देहांत हो गया। शव को अंत्येष्टि के लिए सैदपुर घाट पर लाया गया। तब लोगों को दूध-भात खाने का रहस्य समझ आया। ये घटना उनके दिव्य ज्ञान की झलक थी, जैसे परमात्मा ने खुद उनके माध्यम से लीला रची हो। इस घटना के बाद वे ज्यादा दिनों तक घर नहीं ठहर सके। उनका मन वैराग्य की ओर मुड़ गया, जो हमें सिखाता है कि सांसारिक बंधन कितने क्षणिक हैं।

### वैराग्य का उदय और गुरु की खोज

उन दिनों कारो नामक जगह में रामानुजी संप्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा बाबा शिवराम जी रहते थे। कीनाराम जी के मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। वे उनके दरबार में पहुंचे और सेवा में लग गए। उन्होंने निवेदन किया कि मुझे शिष्य रूप में स्वीकार कर मेरा भवबंधन काट दीजिए। लेकिन शिवराम जी ने पहले स्वीकार नहीं किया। एक दिन विचित्र घटना हुई। शिवराम जी के साथ कीनाराम जी गंगा तट पर खड़े थे। शिवराम जी ने पूजन का सामान और भगवा वस्त्र देकर जल में स्नान करने को कहा। लेकिन उन्होंने देखा कि गंगाजल बढ़कर तट पर खड़े कीनाराम जी के चरणों को स्पर्श कर रहा है। वे चकित हो गए और बड़ी प्रसन्नता से कीनाराम जी को मंत्र देकर अपनी शरण में ले लिया। कीनाराम जी ने उनके स्तवन में कहा: “कल्पन हूँ के कल्पतरु गुरु दयाल जिय जान। शिवराम है नाम शुचि रामकिना पहिचानि।” ये शब्द गुरु की महिमा गाते हैं, जो दिल को छू जाते हैं। लेकिन वे ज्यादा दिनों तक शिवराम जी के पास नहीं रह सके। परिस्थितियों से विवश होकर बाबा कीनाराम जी ने कहा कि मैं दूध-भात खाना चाहता हूँ। मां ने समझा

निकल पड़े। आसन उठा लिया और नैगड़ीह गांव पहुंचे। वहाँ एक बुद्धिया को रोते देखा तो रोने का कारण पूछा। बुद्धिया ने कहा, “बाबा, तुम अपनी राह जाओ।” लेकिन बाबा ठहर गए। अखिर बुद्धी ने बताया कि जर्मीदार का कर बाकी है, वह मेरे लड़के को बलपूर्वक पकड़ ले गया। बाबा बुद्धिया के साथ जर्मीदार के घर गए। लड़का कड़के की धूप में खड़ा था। बाबा ने जर्मीदार से कहा कि इसे छोड़ दो, लेकिन वह नहीं माना। उसने कहा कि भिक्षा चाहते हो तो लेकर चले जाओ, या सारा कर खुद दे दो। महाराज को ये बात लग गई। उन्होंने लड़के को हटने को कहा और जर्मीदार से बोले कि इस जगह को खोदो, रुपये मिलेंगे, जितना चाहो ले लो। जमीन खोदी गई, रुपये देख जर्मीदार उनके चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगी। बाबा ने बुद्धिया से कहा, “अपना लड़का ले जा।” लेकिन बुद्धिया बोली, “कृपानाथ, ये पुत्र आपका है।” उसने लड़के को महाराज के चरणों में समर्पित कर दिया। बाबा ने उसका नाम बीजाराम रखा। बीजाराम उनके प्रसिद्ध और मुख्य शिष्यों में गिने जाते हैं। ये लीला देखकर लगता है कि परमात्मा दीनों की रक्षा के लिए संतों को भेजते हैं।

### यात्राओं में चमत्कारों की लीला

एशिय बीजाराम के साथ बाबा तीर्थ-भ्रमण करने लगे। कई सालों बाद वे गांव लैटे। गांव के दक्षिण वाणगंगा सरिता के निकट जंगल में वट वृक्ष के नीचे आसन लगाया। भजन करने लगे। धीरे-धीरे दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ने लगी। बाबा ने एक पक्का कुआं बनवाया। इसी तरह एक पक्का वरामदा बनवाया, लेकिन छत को उपलों से पटवाया और कहा, “तुम पक्की हो जा।” उनके कहते ही छत पक्की हो गई। कुआं रामसागर नाम से प्रसिद्ध है। इस तपोभूमि के निकट कीनेश्वर महादेव का मंदिर भी है। दर्शनार्थियों की भीड़ से उकताकर बाबा फिर तीर्थ-भ्रमण को निकले। वे जूनागढ़ पहुंचे। नगर के बाहर आसन लगा दिया। बीजाराम को केवल तीन घरों से भिक्षा मांगने का आदेश दिया। लेकिन भिक्षा मांगते ही सिपाहियों ने उन्हें जेल में डाल दिया। बहुत से साधु जेल में बंद थे, उनके पीसने के लिए 981 चक्रियां थीं। बीजाराम के देर होने पर बाबा ने ध्यान से सारी घटना समझ ली। खुद नगर में भिक्षा मांगने आए। उन्हें भी जेल में डाल दिया और आटा पीसने का आदेश मिला। बाबा ने एक चक्रिया पर डंडा मारा, वह चलने लगी। उसी तरह बाकी चक्रियां भी चलने लगीं। ये बात नगर में बिजली की तरह फैल गई। नवाब ने बाबा से क्षमा मांगी और हीरे-मोती से भरी थाल भेट की। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आएं, उतनों को ढाई-दोहरा पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर लगाई और हीरे-मोती देने की धूमधार लगायी। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खड़े हैं, न मीठे। नवाब ने भेट स्वीकार करन

**म**ध्य प्रदेश के छोटे-छोटे गाँवों में ये दिन ऐसे बीते जैसे कोई बुरा सपना। बच्चे जो बुखार या सर्दी की छोटी-मोटी बीमारी से ज़ुझ रहे थे, उन्हें दी गई एक साधारण सी कफ सिरप ने उनकी जान ले ली। ये घटना सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था की कमज़ोरियों की कहानी है। अक्टूबर दो हजार पचीस के पहले हफ्ते में, जब खबरें आईं कि कम से कम बाईंस बच्चे इस ज़हरीली दवा से मरे गए, तो पूरे देश में सवाल उठे। ये बच्चे गरीब परिवारों के थे, जो सस्ती दवाओं पर निर्भर थे। लेकिन क्या ये सिर्फ एक कंपनी की ग़लती थी, या बड़े सिस्टम की नाकामी? आइए, इसकी परते खोलते हैं, धीरे-धीरे, ताकि हम सब सोचें कि आगे क्या बदलाव लाएँ।

### क्या हुआ छिंदवाड़ा के इन गाँवों में?

छिंदवाड़ा ज़िले के परासिया तहसील के आसपास के गाँवों में, अगस्त के मध्य से ही बच्चों में बुखार और सर्दी के मामले बढ़ने लगे। ये कोई नई बात नहीं थी—बारिश के मौसम में वायरल बुखार तो होता ही है। माता-पिता अपने नहे बच्चों को नज़दीकी डॉक्टर के पास ले गए। वहाँ से मिली दवा थी—कोलिड्रफ नाम की कफ सिरप। ये सिरप सस्ती थी, आसानी से मिल जाती थी, और डॉक्टरों ने इसे भरोसे से लिखा। लेकिन ये सिरप ज़हरीली साबित हुई।

इस सिरप में डायइथाइलीन ग्लाइकॉल नाम का एक केमिकल मिला था, जो ब्रेक फ्लूइड और एंटीफ्रिज में इस्तेमाल होता है। ये केमिकल इतना खतरनाक है कि थोड़ी-सी मात्रा भी किडनी को खराब कर देती है। टेस्टिंग में पता चला कि सिरप में ये केमिकल सैतालीस प्रतिशत से ज़्यादा था—जितना मिलना चाहिए, उससे सैकड़ों गुना ज़्यादा। बच्चे पहले तो सामान्य बुखार से पीड़ित दिखे। फिर, कुछ दिनों बाद उल्टी शुरू हो गई, पेट दर्द हुआ, और सबसे डरावनी बात—पेशाब बंद हो गया। ये लक्षण किडनी फेलियर के थे।

पहली मौत तो सिंतंबर के दूसरे दिन हुई। उसके बाद, एक के बाद एक बच्चे अस्पताल पहुँचे। छिंदवाड़ा के सरकारी अस्पतालों में जगह कम थी, तो परिवार वाले बच्चों को नागपुर के निजी अस्पतालों में ले गए। वहाँ डायलिसिस चली, वेंटिलेटर पर रखा गया, लेकिन कई बच्चे बच न सके। कुल मिलाकर, सत्रह बच्चे छिंदवाड़ा से, दो बैतूल से, और एक पंधुराना से थे। ये मौतें सात हफ्तों में हुईं—अगस्त से अक्टूबर तक। अभी भी पाँच बच्चे इलाज में हैं: दो नागपुर के मेडिकल कॉलेज में, दो एम्स में, और एक निजी अस्पताल में।

ये सब कैसे हुआ? सिरप बनाने वाली कंपनी, स्टेसन फार्मास्यूटिकल्स, तमिलनाडु के कांचीपुरम में है। वहाँ के फैक्टरी का हाल देखकर कोई भी सिहर उठे। गंदे फर्श, हवा में फ़िल्टर न होना, चूहों का डर—और सबसे बड़ी बात, तीन सौ चौंसठ नियमों का उल्लंघन। कच्चा माल टेस्ट ही नहीं किया गया। प्रोपाइलीन ग्लाइकॉल नाम का सॉल्वेंट इस्तेमाल किया गया, जो सस्ता लेकिन ज़हरीला था। कंपनी ने इसे दवा के रूप में बेचा, बिना चेक किए। मध्य प्रदेश की ड्रग कंट्रोल टीम ने अक्टूबर के तीसरे को ये conrm किया। उसके बाद तमिलनाडु ने सिरप पर बैन लगा दिया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

ये घटना सिर्फ स्थानीय नहीं। गुजरात में भी दो और सिरप—रेस्प्रेफ्रेश टीआर और रिलाइफ—में वही ज़हर मिला। उन्हें भी वापस बुला लिया गया। सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल अर्गनाइजेशन ने कहा कि ये सिरप एक्सपोर्ट नहीं हुए, लेकिन डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी कि अवैध रास्तों से बाहर जा सकते हैं। ये सब देखकर लगता है कि सस्ती दवाओं की दुनिया में कहीं न कहीं लापरवाही है। गरीब



## मध्य प्रदेश में कफ सिरप का काला दाया

परिवार जो पाँच-दस रुपये की सिरप पर भरोसा करते हैं, वे सबसे ज़्यादा प्रभावित होते हैं। क्या हमारी व्यवस्था उन्हें बचाने के लिए बनी है, या सिर्फ कागज़ों पर?

### उन गासुरों की अनकठी दर्द भरी कहानियाँ

हर मौत के पीछे एक परिवार की कहानी है, जो सुनकर मन भारी हो जाता है। ये बच्चे खेलने-कूदने की उम्र के थे, लेकिन ज़हरीली दवा ने उनके सपनों को चूर कर दिया। चलिए, कुछ परिवारों की बात करते हैं—बिना ज़्यादा भावुक हुए, बस इतना कि हम समझे कि ये सिर्फ आँकड़े नहीं, जीवंत ज़िंदगियाँ थीं।

दिव्यांश यादवांशी, छह साल का ये बच्चा दूरी गाँव का रहने वाला था। उसके प्रकाश एक छोटे किसान हैं। अगस्त के सोलह को दिव्यांश को हल्का बुखार आया—सौ डिग्री फ़ारेनहाइट। अगले दिन परासिया के डॉक्टर प्रवीण सोनी के पास गए। डॉक्टर ने इंडीकलाव गोलियाँ और कोलिड्रफ सिरप लिखी—चार बार दिन में। कुछ दिन ठीक रहा, लेकिन उन्नीस को फिर बुखार चढ़ा। बाईंस की रात को उल्टी शुरू हो गई। परिवार वाले छिंदवाड़ा ले गए, वहाँ से विव अस्पताल। इंजेक्शन और ग्लूकोज़ चढ़ाया गया। लेकिन चौबीस को पेशाब बंद। नागपुर के कलर्स अस्पताल में टेस्ट हुए—किडनी फेल। सात बार डायलिसिस चली, वेंटिलेटर पर रखा। लेकिन सात लाख रुपये का खर्च—ज़मीन बेची, गहने गिरवी रखे। फिर भी, सिंतंबर के दूसरे को दिव्यांश चला गया। प्रकाश कहते हैं, “सरकारी अस्पताल बेकार हैं। पशुओं वाले बेहतर हैं। हम गरीबों का क्या?” उनका बच्चा आधिकारिक लिस्ट में नहीं आया, तो चार लाख का मुआवजा भी न मिला।

ये सब कैसे हुआ? सिरप बनाने वाली कंपनी, स्टेसन फार्मास्यूटिकल्स, तमिलनाडु के कांचीपुरम में है। वहाँ के फैक्टरी का हाल देखकर कोई भी सिहर उठे। गंदे फर्श, हवा में फ़िल्टर न होना, चूहों का डर—और सबसे बड़ी बात, तीन सौ चौंसठ नियमों का उल्लंघन। कच्चा माल टेस्ट ही नहीं किया गया। प्रोपाइलीन ग्लाइकॉल नाम का सॉल्वेंट इस्तेमाल किया गया, जो सस्ता लेकिन ज़हरीला था। कंपनी ने इसे दवा के रूप में बेचा, बिना चेक किए। मध्य प्रदेश की ड्रग कंट्रोल टीम ने एक्सपोर्ट नहीं किया। उसके बाद तमिलनाडु ने सिरप पर बैन लगा दिया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

अगस्त को बुखार। पिता माहेश काम पर थे, चाचा ले गए डॉक्टर सोनी के पास। कोलिड्रफ लिखी। तीन सिंतंबर को फिर बुखार, पेशाब बंद। नाहर डॉक्टर के पास—किडनी फेल। छिंदवाड़ा सिविल अस्पताल, फिर नागपुर मेडिकल कॉलेज। पाँच सिंतंबर को विद्या चली गई। माहेश कहते हैं, “वो मेरा इकलौता बच्चा था। परासिया में क्या हो रहा, किसी को पता न था। दवा ही खतरा थी, ये किसने सोचा?”

ऐसी कई कहानियाँ हैं। परिवार वाले निजी अस्पतालों पर निर्भर रहे, क्योंकि सरकारी सुविधाएँ कमज़ोर हैं। डॉक्टर नागपुर के थे, जिन्होंने बाईंस सिंतंबर को डीईजी ज़हर का शक जाता था। लेकिन तब तक कई बच्चे चले गए। ये कहानियाँ बताती हैं कि सस्ती दवा का भरोसा कितना भंग हो गया। माता-पिता ने जो किया, वो एक पिता-माँ का प्यार था—बस, सिस्टम ने साथ न दिया। क्या हम सोचते हैं कि ऐसे परिवारों के लिए बेहतर विकल्प कैसे बनें?

### सरकार का जवाब: कर्तवाई हुई, लेकिन देर से?

जब ये मौतें बढ़ीं, तो सरकार ने क्या किया? सबसे पहले, मध्य प्रदेश सरकार ने इनकार किया कि मौतें सिरप से जुड़ी हैं। सिंतंबर के आखिर में सैंपल लिए गए, लेकिन रिपोर्ट आने में देरी। अक्टूबर के तीसरे को तमिलनाडु की लैब ने conrm किया। उसके बाद एक्स्ट्रान तेज़ हुआ। पाँच अक्टूबर को डॉक्टर प्रवीण सोनी के खिलाफ एफआईआर, और उसी रात गिरफ़तारी। कंपनी स्ट्रेसन फ़ार्मां ने मालिक को भी पकड़ा गया। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम बनी। डिप्टी ड्रग कंट्रोलर शोभित कोस्टा सर्पेंड, इंस्पेक्टर गौरव शर्मा और शरद कुमार जैन पर कार्रवाई। स्टेट फूड एंड ड्रग कंट्रोलर दिनेश कुमार मौर्य ट्रांसफर।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने छह अक्टूबर को परिवारों से मिले। चार लाख रुपये का मुआवजा घोषित, इलाज का खर्च राज्य वहन करेगा। छिंदवाड़ा कलेक्टर ने तीन टीमें बनाईं मदद के लिए। केरल, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु में सिरप बैन। गुजरात में दो और सिरप रिकॉल। डब्ल्यूएचओ को आश्वासन दिया कि एक्सपोर्ट नहीं हुए।

लेकिन ये सब देर से। परिवार कहते हैं कि सिंतंबर में ही अलर्ट होता, तो बचाव होता। कॉंप्रेस ने स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला का इस्तीफा माँगा, और सीबीआई ज़मीन की डिमांड की। पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हुई—सीबीआई प्रोब, रेगुलेटरी फेलियर पर, और पूरे देश में हेत्य क्राइसिस अलर्ट। लेकिन दस अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। कहा, राज्य स्तर पर ज़ाँच चल रही है, पर्याप्त है। अटार्नी जनरल ने कहा कि पिटीशनर अखबार पढ़कर आया लगता है।

डॉक्टरों का गुस्सा भी फूटा। सोनी की गिरफ़तारी के बाद परासिया में हड़ताल। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने कहा, डॉक्टर दवा लिखते हैं, क्वालिटी चेक सरकार का काम। आठ अक्टूबर को साइलेंट रैली हुई। ये दिखाता है कि कार्रवाई हुई, लेकिन संतुलन कहाँ? डॉक्टरों को दोष देना आसान, लेकिन मैन्युफैक्चरर और रेगुलेटर पर सख्ती ज़रूरी। सरकार ने कोशिश की, लेकिन शुरुआती लापरवाही ने नुकसान बढ़ाया। क्या ये सीख बनेगी?

### पुरानी भूलें जो आज भी सताती हैं

ये पहली बार नहीं जब तब तक कर्तवाई हुई थी। भारत ने ज़्यादा दशकों से हो रही है। सन् उन्नीस सौ छियासी में हरियाणा में सतर बच्चे मरे गए—डीईजी से। नब्बनवे में मुंबई में सैतालीस। दो हजार दो में गुजरात में अठारह। लेकिन सबसे बड़ा झटका दो हजार बाईंस में लगा। गाम्बिया में छियासठ बच्चे, उज्बेकिस्तान में साठचौसठ, इंडोनेशिया में सौ से ज़्यादा बच्चे और डब्ल्यूएचओ ने अलर्ट किया, भारत ने रेगुलेशन्स टाइट किए, लेकिन घरेलू बाजार में ढील बनी रही।

क्यों होता है ये? भारत का फ़ार्मा उद्योग सतर छह बिलियन डॉलर का है, एक्सपोर्ट पर ज़ोर। विदेशी बाज़ार सख्त चेक करते हैं, लेकिन अंदरूनी छोटी कंपनियाँ बच जाती हैं। सीबीएससीओ ने हाल के सालों में सौ से ज़्यादा सिरप

# मां दुर्गा की महा कृपा के अद्वित अनुभव



## करोड़ों में से किसी एक को होता है यह रोग मां दुर्गा के पाठ से हुआ समाप्त

जयपुर के श्री यवन कुमार शर्मा ने बताया कि भेरी छोटी धुवी शर्मा जो तीन वर्ष की है को जब बुखार होता था तब 103 डिग्री से ऊपर घला जाता था। उसके हाथ-पैर निक्षिय हो जाते थे और आंखें ठंडर जाती थीं। ऐसा

लगता था कि जैसे वह मर गई है। ऐसा कुछ मिनटों के लिए होता था। इकट्ठर सालों ने बताया कि यह रोग करोड़ों में से किसी एक को होता है। यह खतरनाक दौरा होता है। इनमें उसे जयपुर के सबसे बड़े अस्पताल जे. के. लोन में भी दिखाया था लेकिन कोई ठंड प्राप्त नहीं हुआ। एक दिन मैं पूरे परिवार के साथ वृद्धावन समागम में गया लेकिन यहाँ भी अचानक उसे फिर से दौरा पड़ा। इन बहुत घबरा गए। जल्द इन रुके हुए थे वर्षी से राशि को सी

सीधा अस्पताल लेकर जाना पड़ा। धुवी को अस्पताल में भर्ती कर लिया गया। इन परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि इनमें समागम में बुलाओ। ऐसा सौभाग्य हुआ कि इन समागम में गए और गुरुदेव जी महाराज के उपर भी जाने का अवसर मिला। इनमें विशेष कृपा ग्रहण की जिसके प्रभाव से और गुरुदेव जी के आशीर्वाद से वह ठीक है। अब



## विदेश से ली एमबीबीएस की डिग्री अब कर रही है इंटर्नशिप



## अस्थमा की समस्या से मिली राहत

इब्नेने बताया कि जैसे ही नौसम बदलता था, उन्हें अस्थमा की तकलीफ हो जाती थी। सांस लेने में कठिनाई के कारण वे बेल्ड प्रेशन और नानासिक रूप से अस्वस्थ महसूस करती थी। पीलीआई में जांच कराने पर 5, कटरों ने इसे अस्थमा की पुरी की थी। यह रोग सानाव्यतः वायुबंदीय बदलाव, धूल, प्रदूषण या एलर्जी के कारण उत्पन्न होता है और रोगी के जीवन को असङ्ग बना देता है। लोकेन अद्भुत रूप से परम पूज्य गुरुदेव जी ने जो सानाव्यतः वायुबंदीय बदलाव, धूल, प्रदूषण या एलर्जी के कारण उत्पन्न होता है और उनकी अनुभव किया कि सांस लेने में अब कोई तकलीफ नहीं रही और उन्हें गलरी राहत मिली। और उनकी यह समस्या पूरी तरह से ठीक हो गई।

## पुराने दर्द से मिली मुक्ति

एक बुलन ने बताया कि उनका एट कर्फ दिनों से दाई तरफ से दर्द कर रहा था। साथ ही कंधों में लगातार पीड़ा बनी हुई थी और आज तो कमर में भी श्रस्तावीय दर्द होने लगा था। इन सब कारणों से नानासिक तनाव भी बढ़ता जा रहा था। सानाव्यतः इस प्रकार के दर्द नांसेशीयों की जकड़ा, यावन तंग की गँड़बड़ी या नसों पर बदाव के कारण उत्पन्न होते हैं और जीवन की दिनर्याएँ को बाधित कर देते हैं। गुरुदेव द्वारा सानाव्यतः वायुबंदीय बदलाव, धूल, प्रदूषण या एलर्जी के कारण उत्पन्न होता है और उनकी अनुभव किया कि सांस लेने में अब कोई तकलीफ नहीं रही और उन्हें गलरी राहत मिली। और उनकी यह समस्या पूरी तरह से ठीक हो गई।

## सिरदर्द व अनिद्रा की समस्या हुई पूरी तरह ठीक

एक भाई ने बताया कि उन्हें पिछले एक सप्ताह से क्रान्तिक लेडे की समस्या बनी हुई थी। लगातार सिरदर्द के कारण वे ठीक से नींद भी नहीं ले पाए थे, जिससे थकान और बेंदी बढ़ी जा रही थी। आम तौर पर सिरदर्द तनाव, माझेन, नींद की कमी या नसों के दबाव से उत्पन्न होता है और यह रोगी के नानासिक संतुलन को गहराई से प्रभावित करता है। सानाव्यतः वायुबंदीय बदलाव, धूल, प्रदूषण से सिरदर्द पूरी तरह समाप्त हो गया था और अब वे गलरी शांति और सुकून का अनुभव कर रहे हैं।

## चेहरे का लकवा हुआ समाप्त

पटियाला, पंजाब की श्रीमती नाम कैलायो ने बताया कि मेरे बेटे गगनदीप सिंह को ब्रेन हैमरेज हो गया था। मैंने उसे 22 नवंबर को ब्रेन एंड मर्टीस्पेशलिटी हास्पिटल

22 नंबर फाटक, भूमिद्वा रोड पर डा सचदेवा को दिखाया था। वहाँ से उसका इलाज करवाया था। समय कम था व्याकिं उसे इंलैंड जाना था। मैंने अपने बेटे के लिए प्राप्त किया था। दबा और दुआ दोनों के प्रभाव से वह समय से पहले ही ठीक हो गया और फलाइट पकड़कर इंलैंड चला गया। उसे इंलैंड याये हुए एक साल हो गया है। वह भी पाठ करता है और उसे कोई समस्या नहीं है। गुरु जी की कृपा से और पाठ के प्रभाव से हुआ है।

## आधी जीभ कटने के बाद भी जिंदा हूं

अस्टरेटिव कोलाइटिस और भयंकर जीभ कैंसर से निती मुक्ति

जयपुर के श्री यवन कुमार शर्मा ने बताया कि मैं जयपुर के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल सर्वांगानीसंह थिकित में कार्यरत था। 34 वर्ष में डिक्टेटर विभाग में डायरीशियन के पद से 2021 में सेवानिवृत्त हुआ था। यह पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज से 2004 में बीज निवारण की पाठ ग्रहण किया था। ज्ञेश अस्टरेटिव कोलाइटिस हो गया था जो याद की कृपा से ठीक हो गया था तो 2006 में पुनः जीभ कैंसर से गया। नेडिकल कायाग के अनुभव के कारण मैं

इस स्थिति से घबरा गया था। क्योंकि इस रोग का परिणाम गुल्मी होता है। मैंने टाटा बैनोरियल कैंसर अस्पताल से इलाज करवाया व्याकिं सद्गुरु जी की आज्ञा है कि दबायाँ अवश्य हैं। ऐरी आधी जीभ कैट दी मृद और ऐरी आधी कैवल यंगर वर्जिटरी की नींद हो गई। मैं पाठ करता रहा और प्राप्त कृपा से कुछ ही समय में बिल्कुल ठीक हो गई। मैं सब कुछ खाने लगा और उच्चारण भी ठीक हो गया। इतने वर्ष जीवन के बाद मैं कोई नहीं खाता और न कोई इलाज करवाया हूं। पाठ की कृपा से बिल्कुल ठीक हूं और नवा जीवन की ठीक हो गये, यह परम पूज्य सद्गुरुदेव जी की असीक कृपा है।

# गाजा शांति सम्मेलन: भारत की नई जिम्मेदारी

**ग**जा में चल रहे संघर्ष ने पूरी दुनिया को हिला दिया है। दो साल से ज्यादा समय हो गया जब हमास और इजरायल के बीच जंग शुरू हुई थी। अब एक नई उम्मीद जगी है। मिस्र के शर्म अल-शेख में 13 अक्टूबर को एक बड़ा शांति सम्मेलन होने वाला है। इसकी मेजबानी कर रहे हैं अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी। इस सम्मेलन में कई देशों के नेता आएंगे। खास बात ये है कि भारत को भी न्योता मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिस्र के राष्ट्रपति सिसी ने आमंत्रित किया। लेकिन पीएम खुद नहीं जा रहे। उनके बजाय विदेश राज्य मंत्री कर्ति वर्धन सिंह भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। ये खबर भारत के लिए बड़ी है। क्यों? क्योंकि ये दिखाता है कि भारत अब मध्य पूर्व की कूटनीति में कितना महत्वपूर्ण हो गया है। हमारा देश हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है। लेकिन अब ये भूमिका और मजबूत हो रही है। सम्मेलन से पहले हमास ने कहा है कि वो इजरायली बंधकों को रिहा करेगा। लेकिन बातचीत में मुश्किलें भी बताई हैं। ये सब कुछ मिलाकर एक नया दौर शुरू हो सकता है। आइए, इसकी गहराई समझें।

ये सम्मेलन सिर्फ एक बैठक नहीं। ये गाजा में युद्ध खत्म करने का पहला कदम हो सकता है। सम्मेलन में इजरायल-हमास युद्धविराम के पहले चरण पर हस्ताक्षर होंगे। मिस्र की मध्यस्थता में बातें हो रही हैं। हमास ने कहा है कि वो औपचारिक हस्ताक्षर से दूर रहेगा, लेकिन चर्चा में हिस्सा लेगा। भारत का न्योता मिलना कोई संयोग नहीं। हमारा देश इजरायल का करीबी दोस्त है। साथ ही, फिलिस्तीन के हितों का भी ख्याल रखता है। ये संतुलन भारत की ताकत है। सम्मेलन में भारत सुरक्षित इजरायल और एक मजबूत फिलिस्तीनी राज्य की बात करेगा। ये हमारी वैश्विक छवि को नई ऊंचाई देगा। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये शांति टिक पाएंगी? या फिर ये सिर्फ एक अस्थायी राहत होगी? इन सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए हमें और गहराई में जाना होगा।

## ट्रंप-सिसी का न्योता: भारत के बनेगा मुख्य खिलाड़ी

अमेरिका और मिस्र के राष्ट्रपतियों ने आखिरी पल में भारत को बुलाया। ये न्योता प्रधानमंत्री मोदी के नाम था। लेकिन व्यस्तताओं के कारण वो खुद नहीं जा पा रहे। इसके बजाय कर्ति वर्धन सिंह वहां भारत की आवाज बनेंगे। ये फैसला सोच-समझकर लिया गया लगता है। सिंह मध्य पूर्व के मुद्दों पर अच्छी पकड़ रखते हैं। सम्मेलन में बीस से ज्यादा देशों के नेता आएंगे। ब्रिटेन के पीएम कीर स्टार्मर, इटली की जॉर्जिया मेलोनी और पाकिस्तान के शहबाज शरीफ भी शामिल होंगे। ईरान को भी बुलाया गया है, लेकिन उसकी पुष्टि नहीं हुई। ट्रंप ने कहा है कि ये शिखर सम्मेलन मध्य पूर्व में शांति लाएगा। सिसी की भूमिका अहम है, क्योंकि मिस्र हमास और इजरायल के बीच पुल का काम कर रहा है।

भारत का यहां आना स्वाभाविक है। हमारा देश मध्य पूर्व से गहरा रिश्ता रखता है। इजरायल से रक्षा और तकनीक का सहयोग मिलता है। मिस्र और अन्य अरब देशों से व्यापार। सम्मेलन में भारत मानवीय सहायता पर जोर देगा। गाजा का पुनर्निर्माण में हमारी भूमिका हो सकती है। ट्रंप के शांति प्लान में भारत को गाजा के फिर से बनाए



जाने का नेतृत्व करने का प्रस्ताव है। ये भारत की निष्पक्ष छवि को मजबूत करेगा। लेकिन चुनौतियां भी हैं। हमास ने बातचीत में कठिनाइयों का जिक्र किया है। क्या भारत इनके बीच संतुलन बना पाएगा? ये सवाल सोचने लायक है। हमारा इतिहास देखें तो नेहरू जी के समय से भारत ने फिलिस्तीन का साथ दिया। लेकिन मोदी जी के नेतृत्व में इजरायल से दोस्ती बढ़ी। अब ये दोनों को जोड़ना हमारी जिम्मेदारी है। सम्मेलन से भारत की कूटनीति नई दिशा ले सकती है। ये न सिर्फ क्षेत्रीय शांति के लिए अच्छा होगा, बल्कि हमारी वैश्विक साख भी बढ़ेगी।

सम्मेलन की तैयारी तेज है। शर्म अल-शेख में सुरक्षा के कड़े इंतजाम हैं। ट्रंप और सिसी मिलकर योजना बना रहे हैं। भारत का प्रतिनिधिमंडल वहां जाकर हमारी चिंताओं को रखेगा। जैसे कि गाजा में मानवीय संकट खत्म हो। वहां के लोग बेघर हो गए हैं। अस्सी प्रतिशत आबादी विस्थापित है। भारत ने पहले भी सहायता भेजी है। अब ये मौका है कि हम और आगे बढ़ें। लेकिन ये सब आसान नहीं। मध्य पूर्व की राजनीति जटिल है। ईरान, सऊदी अरब और तुर्की जैसे देशों के हित टकराते हैं। भारत को इन सबके बीच अपना रास्ता बनाना होगा। ये सम्मेलन भारत के लिए एक परीक्षा है। पास करने पर हम एक बड़ा कदम रखेंगे।

## हमास की घोषणा: बंधक रिहाई से पहले चुनौतियां

सम्मेलन से ठीक पहले हमास ने एक बड़ा ऐलान किया। संगठन ने कहा कि वो इजरायली बंधकों को रिहा करेगा। दो साल पहले सात अक्टूबर को हमास ने इजरायल पर हमला किया था। तब चालीस से ज्यादा बंधक ले लिए गए थे। अब बाकी बत्तीस बंधक जिंदा बताए जा रहे हैं। हमास ने कहा कि सोमवार सुबह तक रिहाई शुरू हो जाएगी। ये युद्धविराम समझौते का हिस्सा है। इजरायल ने भी सहमति दी है। बदले में इजरायल

सबसे पहले ऊर्जा सुरक्षा। मध्य पूर्व से भारत को तेल-गैस आता है। गाजा का संघर्ष अगर बड़ा तो कीमतें आसमान छू सकती हैं। हमारी अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी। दूसरे, हमारे प्रवासी भार्डी हैं। लाखों भारतीय वहां काम करते हैं। सऊदी, यूएई, मिस्र में। युद्ध फैला तो उनकी जान को खतरा। भारत सरकार हमेशा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करती है। सम्मेलन में ये मुद्दा उठेगा। तीसरा, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई। हमास जैसी ताकतें कश्मीर में भी सक्रिय हैं। जयश-ए-मोहम्मद और लश्कर से हाथ मिला चुके। भारत का रुख साफ है। आतंकवाद को कभी बख्शा नहीं जाएगा। लेकिन शांति से ही इसे रोका जा सकता है।

भारत की कूटनीति में मध्य पूर्व अहम है। हम इजरायल से हथियार लेते हैं। फिलिस्तीन को सहायता देते हैं। ये संतुलन हमारी ताकत। मोदी जी ने कहा है कि सुरक्षित इजरायल और मजबूत फिलिस्तीन दोनों जरूरी। सम्मेलन में भारत ये आवाज बुलाएं करेगा। गाजा के पुनर्निर्माण में हम नेतृत्व ले सकते हैं। ये न सिर्फ मानवीय होगा, बल्कि अर्थिक फायदा भी। भारतीय कंपनियां वहां काम करेंगी। नौकरियां पैदा होंगी। लेकिन चुनौतियां हैं। ईरान का असर, क्षेत्रीय प्रतिवृद्धि। भारत को सावधानी से कदम रखना होगा। हमारी नीति 'सभी के साथ' है। किसी से दुश्मनी नहीं। ये सम्मेलन भारत को वैश्विक मंच पर नई पहचान देगा।

प्रवासी भारतीयों की बात करें। खाड़ी देशों में करीब नौ करोड़ भारतीय हैं। उनका भला हमारी प्राथमिकता। युद्ध से पलायन बड़ा तो समस्या। सम्मेलन में भारत ये सुनिश्चित करेगा कि सहायता पहुंचे। ऊर्जा के मोर्चे पर, हम विविधीकरण कर रहे हैं। लेकिन मध्य पूर्व अनदेखा नहीं। आतंकवाद का कनेक्शन गहरा। हमास का कश्मीर से रिश्ता खतरे की घंटी। भारत का अनुभव यहां काम आएगा। हमने कई आतंकी संगठनों को हराया। शांति से ही स्थानीय समाधान। ये सम्मेलन भारत के हितों को मजबूत करेगा। लेकिन ये सिर्फ हित नहीं, नैतिक जिम्मेदारी भी। दुनिया देख रही है कि भारत कैसे कदम रखता है।

## नई उम्मीदें: भारत की वैश्विक यात्रा का नया अध्याय

गाजा की हालत दिल दहला देने वाली है। संयुक्त राष्ट्र कहता है कि इलाका रहने लायक नहीं बचा। बीस लाख लोग बिना घर के। भोजन, पानी की कमी। भारत ने हमेशा मानवीय सहायता के ट्रक अंदर घुस रहे हैं। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये स्थायी होगा? हमास के नेता कहते हैं कि इजरायल की शर्तें कड़ी हैं। इजरायल का कहना है कि हमास को पूरी तरह हटाना जरूरी। बीच में ये फैसला है। भारत के नियरिए से देखें तो ये आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई है। हम हमास को आतंकी मानते हैं। लेकिन शांति के लिए बातचीत जरूरी। सम्मेलन में ये मुद्दे उठेंगे। कर्ति वर्धन सिंह वहां भारत की बात रखेंगे। कि बंधकों की सुरक्षित रिहाई हो। और गाजा में शांति बने रहे।

गाजा की हालत दिल दहला देने वाली है। संयुक्त राष्ट्र कहता है कि इलाका रहने लायक नहीं बचा। बीस लाख लोग बिना घर के। भोजन, पानी की कमी। भारत ने हमेशा मानवीय सहायता दी है। अब सम्मेलन में हम पुनर्निर्माण की बात करेंगे। लेकिन हमास की चेतावनी सोचने पर मजबूर करती है। क्या रिहाई के बाद फिर तनाव बढ़ेगा? या ये नया दौर शुरू होगा? ये सवाल सिर्फ नेताओं के नहीं, आम लोगों के भी हैं। इजरायल के परिवार बंधकों की प्रतीक्षा में हैं। फिलिस्तीन के लोग शांति चाहते हैं। बीच में भारत जैसा देश पुल बन सकता है। हमारी नीति हमेशा संतुलित रही। आतंकवाद की निंदा, लेकिन निर्दोषों की रक्षा। ये सम्मेलन उसी दिशा में कदम है।

भारत के हित: ऊर्जा सुरक्षा से लेकर प्रवासी भार्डी की विंता

भारतीय पाठकों के लिए ये सम्मेलन खास क्यों?

# विज्ञान, शब्द और साहस

## 2025 के नोबेल से मिली नई सीख



@ शोभित यादव

**क**ल्पना कीजिए, कि एक प्रयोगशाला, जहां सफेद कोट पहने वैज्ञानिक महीनों तक एक विचार के पीछे जुटे रहते हैं। कहीं एक किताब का पन्ना पलटते हुए नई सोच जन्म लेती है, तो कहीं सूक्ष्मदर्शी के नीचे कोई अनदेखी दुनिया नजर आती है।

यहीं से शुरू होती है बदलाव की कहानी। इंसान की जिज्ञासा, मेहनत और दृढ़ निश्चय जब मिलते हैं, तो नई दिशाएं बनती हैं। सन 2025 के नोबेल पुरस्कार इन्हीं अद्भुत प्रयासों को सलाम करते हैं। इस वर्ष के विजेताओं ने विज्ञान, साहित्य और समाज को नई दृष्टि दी है।

### शरीर की रक्षा का नया रहस्य

चिकित्सा के क्षेत्र में इस वर्ष का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों मैरी ब्रंको, फ्रेड राम्सडेल और शिमोन सकागुची को मिला है। इन तीनों ने शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) के एक महत्वपूर्ण भाग की खोज की, जिसे 'रेगुलेटरी टी कोशिकाएं' कहा जाता है। ये कोशिकाएं हमारे शरीर की रक्षा प्रणाली को संतुलित रखती हैं। जब शरीर किसी संक्रमण से लड़ता है, तो कभी-कभी यहीं प्रणाली गलती से अपने ही अंगों पर हमला करने लगती है। ऐसी स्थिति को ऑटोइम्यून रोग कहा जाता है। यह कोई एक बीमारी नहीं, बल्कि लगभग अस्सी से अधिक बीमारियों का समूह है—जैसे टाइप-1 डायबिटीज, गरिया, मल्टीपल स्क्लेरोसिस और ल्यूपस।

रेगुलेटरी टी कोशिकाएं इस गलती को रोकने का काम

करती हैं। इस खोज से उन बीमारियों के उपचार की नई संभावना बनी है जिनसे दुनिया भर में करोड़ों लोग पीड़ित हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि इन कोशिकाओं को सही दिशा में सक्रिय किया जाए, तो शरीर स्वयं को हानि पहुंचाना बंद कर सकता है। यह खोज चिकित्सा विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जा रही है।

### क्वांटम प्रभाव के बाहर सूक्ष्म कणों तक सीमित नहीं

भौतिकी का नोबेल पुरस्कार इस साल जॉन क्लार्क, मिशेल देवोरेट और जॉन मार्टिनस को प्रदान किया गया है।

इन वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि क्वांटम प्रभाव के बाहर सूक्ष्म कणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बड़े विद्युत परिपथों में भी देखा जा सकता है। इफले तक यह माना जाता था कि क्वांटम सिद्धांत के बाहर परमाणु और इलेक्ट्रॉन जैसी अत्यंत सूक्ष्म वस्तुओं पर लागू होता है।

किंतु इन वैज्ञानिकों ने यह दिखाया कि वही प्रभाव बड़ी प्रणालियों में भी संभव है। यहीं खोज आधुनिक क्वांटम संगणना अर्थात् क्वांटम कंप्यूटिंग की नींव बनी। क्वांटम कंप्यूटर पारंपरिक कंप्यूटरों की तुलना में लाखों गुना तीव्र गति से काम करते हैं।

इनकी सहायता से अत्यंत जटिल गणनाएं कुछ ही क्षणों में की जा सकती हैं। इस खोज से भविष्य में सुरक्षित डिजिटल संचार और तेज़ कंप्यूटर तकनीक के नए द्वार खुलेंगे। यह कहा जा सकता है कि आने वाले युग की तकनीकी क्रांति इन प्रयोगों से ही संभव होगी।

### पर्यावरण के क्षेत्र में नई संभावनाएं खुली

रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार इस बार तीन वैज्ञानिकों सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबर्सन और ओमपर यागी को मिला है। इन वैज्ञानिकों ने धातु और जैविक यौगिकों से बनी नई संरचनाओं का निर्माण किया जिन्हें 'मेटल-ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स' कहा जाता है।

ये सूक्ष्म संरचनाएं जाल की तरह होती हैं, जो गैसों को पकड़ सकती हैं, पानी को सोख सकती हैं और ऊर्जा को संचित कर सकती हैं। इनका उपयोग वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड हटाने, स्वच्छ जल प्राप्त करने और स्वच्छ ऊर्जा संप्रग्रहित करने में किया जा सकता है। इन संरचनाओं के कारण पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई संभावनाएं खुली हैं। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है, तब यह खोज उम्मीद की नई किरण है। आने वाले वर्षों में यह तकनीक ऊर्जा संकट को दूर करने में अहम भूमिका निभा सकती है।

### साहित्य में संवेदना की विजय

साहित्य का नोबेल पुरस्कार इस वर्ष हंगरी के लेखक लास्जलो को मिला है। उनकी कहानियां अत्याचार और भय के बीच भी इंसानियत और आशा को जीवित रखने की मिसाल पेश करती हैं। उन्होंने अपने लेखन से दिखाया कि कला के बाहर मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की आत्मा को जीवित रखने की शक्ति है।

उनके शब्द हमें यह याद दिलाते हैं कि भय और अन्याय के दौर में भी सच्चाई और संवेदना की ज्योति बुझती नहीं।

उनका लेखन यह साबित करता है कि शब्द किसी भी हथियार से अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

### शांतिकी राह पर डटी एक महिला

इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार मारिया मचाडो को मिला है। उन्होंने बीस वर्षों तक तानाशाही शासन के खिलाफ लोकतंत्र की लड़ाई लड़ी जेल, धमकियां और अत्याचार सहते हुए भी वे पीछे नहीं हटीं।

मारिया ने सुमाते नामक संगठन की स्थापना की, जो निष्पक्ष चुनाव और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए काम करता है। उनकी दृढ़ता ने न केवल उनके देश में, बल्कि पूरे लैटिन अमेरिका में लोकतांत्रिक मूल्यों की चेतना को मजबूत किया है। उनकी कहानी यह सिखाती है कि साहस और निष्ठा किसी भी व्यवस्था को बदल सकते हैं।

### बदलाव की जड़ में सवाल और जिज्ञासा

सन 2025 के नोबेल पुरस्कार हमें यह याद दिलाते हैं कि बड़ा परिवर्तन किसी एक क्षण में नहीं होता। वह तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति सवाल पूछता है, नई दिशा में सोचता है और हार नहीं मानता। किसी ने शरीर की कोशिकाओं में उम्मीद खोजी, किसी ने सर्किटों में भविष्य देखा, किसी ने शब्दों में इंसानियत को बचाया और किसी ने लोकतंत्र की लौ को जलाए रखा। इन सबके केंद्र में एक ही बात है ज्ञान, जिज्ञासा और साहस दुनिया को बदलने के लिए बड़े संसाधन नहीं, बल्कि सच्ची सोच और अंडिग इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।

## दुर्गापुर गैंगरेप केस के तीनों आरोपियों को 10 दिन की पुलिस हिरासत

# ममता बोलीं- लड़कियों को रात में बाहर नहीं घूमना चाहिए

@ धीरज कुमार

**क**भी-कभी किसी शहर का अंधेरा सिफ़्र सूरज ढलने से नहीं होता बल्कि तब होता है जब वहाँ इंसानियत मर जाती है। पश्चिम बंगाल के औद्योगिक शहर दुर्गापुर में 10 अक्टूबर की रात कुछ ऐसी ही थी। जब एक मेडिकल कॉलेज की छात्रा के साथ जो हुआ, उसने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया।

दुर्गापुर के शोभापुर इलाके में स्थित एक मेडिकल कॉलेज की छात्रा उस रात अपने दोस्त के साथ दिनर के लिए निकली थी। रात के करीब नौ बजे का वक्त था। दोनों कैपस से पैदल ही निकले थे। शहर का ये इलाका बिल्कुल किनारे पर है जहाँ खेत हैं, झाड़ियाँ हैं, और वो सुनसान सड़कें जिन पर स्ट्रीट लाइटें तो लगी हैं, पर जलती नहीं।

वो रास्ता अंधेरे में ढूबा हुआ था दोनों धीरे-धीर आगे बढ़ रहे थे कि अचानक पीछे से कुछ परछाइयाँ उन पर झपटी। पांच युवक बाइक से आए और रास्ता रोक लिया। उन्होंने पहले छात्रा का मोबाइल छीना और धमकी दी कि पांच हजार रुपये दो, तभी मोबाइल मिलेगा। लड़की ने हिम्मत जुटाकर कहा, मेरे पास पैसे नहीं हैं। जबाब मिला तो कल आना, पैसे लाना और मोबाइल ले जाना।

पर बात यहीं नहीं थमी। कुछ ही पल में वही पांचों युवक लड़की के बाल पकड़कर घसीटने लगे। पास के जंगल की ओर ले गए। और फिर जो हुआ उसे शब्दों में बयां करना नामुमकिन है। लड़की के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुआ।

उसका दोस्त जो उसके साथ था वो डर के मारे भाग गया।

### घटना कॉलेज से सिर्फ़ एक किलोमीटर दूर

वारदात कॉलेज कैपस से मुश्किल से एक किलोमीटर दूर हुई। आसपास के लोगों ने जब शोर सुना तो पुलिस को खबर दी। पुलिस मौके पर पहुंची, तब तक आरोपी फरार हो चुके थे। अगले दिन, पुलिस ने छानबीन शुरू की और मोबाइल ट्रैसिंग के जरिए पांचों आरोपियों तक पहुंच बनाई।

### गिरफ्तार हुए आरोपियों के नाम हैं

अपू बाड़ी, फिरदौस शेख, शेख रियाउज़ुद्दीन उर्फ मंटू, नसीरुद्दीन शेख और शेख सफीकुल। सभी बिजड़ा गांव के रहने वाले हैं, जो कॉलेज से महज दो किलोमीटर की दूरी पर है। पुलिस ने बताया कि लड़की का मोबाइल इन्हीं के पास से बरामद हुआ।

### “अस्पताल ने मिलने नहीं दिया, पुलिस ने FIR नहीं दी”

पीड़िता के पिता जो ओडिशा में रहते हैं उनको रात करीब 10 बजे बेटी की दोस्त का फोन आया। वे उसी वक्त रवाना हो गए। सुबह जब वे अस्पताल पहुंचे, तो उनकी



आंखों के सामने बेटी ICU में पड़ी थी हमें अंदर जाने तक नहीं दिया गया, पिता ने कहा। जब हमने विरोध किया, तब जाकर मिलने दिया। पुलिस ने हमारी एक न सुनी। FIR की कॉपी तक नहीं दी। बाद में जब ओडिशा पुलिस ने दबाव डाला, तब जाकर कार्रवाई हुई। पिता का एक और सवाल है कि वो लड़का जो मेरी बेटी के साथ था, वो भाग चले गया? उसने किसी को कॉल क्यों नहीं किया? क्या डर इतना बड़ा था कि इंसानियत भी पीछे छूट गई?

### “हमारे बच्चे बेगुनाह हैं”

गांव में सनाटा, परिवारों का दावा है कि हमारे बच्चे बेगुनाह हैं। आरोपियों के गांव बिजड़ा में पुलिस की मौजूदगी बढ़ा दी गई है। गांव में तनाव है।

गांव वालों का कहना है कि पुलिस ने बिना सबूत के गिरफ्तारी की है। आरोपियों के परिवार कह रहे हैं कि हमारे बच्चे निर्दोष हैं, उन्हें फ़साया जा रहा है। वहीं पुलिस का कहना है कि सभी सबूत इकट्ठे किए जा रहे हैं, और मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद आरोप पक्के हो जाएंगे।

### राजनीति ने भी नहीं छोड़ा मोका

जैसे ही मामला सामने आया, राजनीतिक बयानबाजी



था, आज वही अस्पताल के बेड पर जिंदगी से जंग लड़ रही है।

वो लड़की जो दूसरों का इलाज करने वाली थी, आज खुद ज़ख्मों से भरी है। उसके पिता की आंखों में बस एक सवाल है क्या हमें न्याय मिलेगा?

**सिस्टम पर सवाल रोशनी  
आई, लेकिन अंधेरा अब भी बाकी है**

घटना के बाद कॉलेज और आसपास की सड़क पर स्ट्रीट लाइटें ठीक कर दी गई हैं। अब वहाँ रोशनी है। पर सवाल ये है कि क्या ये रोशनी उस अंधेरे को मिटा सकती है जो इंसानियत के भीतर फैल चुका है?

हर बार की तरह इस बार भी पुलिस ने कार्रवाई जारी की है। कहकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी। पर ये जारी कार्रवाई कब तक चलेगी? कब तक कोई बेटी सड़क पर डरते हुए चलेगी? कब तक किसी पिता को अपनी बच्ची की लाश देखने से पहले अस्पताल के गेट पर रोका जाएगा?

दुर्गापुर की वो सड़क अब जगमग कर रही है, लेकिन उस रात का अंधेरा अब भी ज़िंदा है। लोगों के दिलों में, शहर की हवा में, और उस पिता की आंखों में जो अब भी अपनी बेटी के लिए इंसाफ़ मांग रहा है। कभी-कभी रोशनी से ज़्यादा ज़रूरत होती है। जबाबदेही की व्यवोंकि जब इंसानियत बुझ जाती है, तब सिर्फ़ शहर नहीं, पूरा समाज अंधेरे में चला जाता है।

## बचाना होगा

गाय अब  
सिर्फ पालतु पशु नहीं

अब वह  
एक राजनीतिक हथियार है

जिसका हिंसात्मक प्रयोग  
लेता है चुनावों में

सांप्रदायिकता फैलाने में  
अपने विरोधियों को धूल घटाने में

हिंदू-मुस्लिम को लड़ने-लड़ाने में  
आज नैने देखा उसे

सड़क पर घूम रही थी  
हाँ दर्दी घर पैरों वाली

पालतू गाय  
वह निगल रही थी

सड़कों पर फेंकी  
फल और सज्जियाँ

कभी -कभी  
पालीथीन में फेंकी जूठन में फंसी दिखी गाय

अब बहुत कम  
बची है हरियाली

गाय के लिए  
विकास पुग ने छीन लिया है इनसे

घास का मैदान और पोखर  
जैसे बच्चों से छिन लिए गए खिलौने

खेल के मैदान पाठ दिए गए  
अब वे इंडोर हो गए

बचपन ने थाम लिया गैजेट  
दादा दादी, नाना-नानी की कलानियों रो गई

बच्चों की शिशुता की जगह  
इंस्टाल हो गई है धूर्तता

ठीक वैसे ही  
जैसे कारपोरेट घरानों ने

गौशालों पर घला दिया हो बुलडोजर  
लगाता है

कुछ भी नहीं बचा अब  
इस दुनिया में

नहीं बचा बच्चों के लिए  
शरारते

मैदान  
कलानियाँ

बड़े और बुढ़े  
नहीं बचा मर्वेशियों के लिए

चारा  
पानी

और हरियाली  
इस अकाल बेला में

बचाना लोगा हों  
हरे-भरे मैदान

खिलौने  
हँसी

और सबसे अंत  
कृतिमता के बदले

जीवन की समरसता

## बहरेपन के बरकस मेढ़क

एक लंबे समय की चुप्पी के बाद  
जब आप पूरी रात

अपनी खामोशियों के बीच सुनते हैं एक आवाज़  
बरसाती मेढ़कों की

जो अक्सर बारिश के बाद  
रात के गहरे सन्नाटे में

करते हैं टर्र-टर्र-टर्र  
निस्तब्धता और काली रात में

एक हस्तक्षेप की तरह  
होते हैं दाखिल

मथते हैं एक विचार बन  
करते हैं मुक्त

अकेलेपन के भय से  
ये आपको उकसाते हैं बोलने के लिए

भयावह रात में उनकी निर्भय टर्र-टर्र है सिखाती  
कैसे सब कुछ है बोल देना

जब आपको बोलने की हो मनारी  
जब पूरे देश में हो पसरा सज्जाटा

कुर्सी से घिपके बेता  
कर रहे हो मनमानी

जब राजा का भेष धर  
चुराने लगे हैं वे जन धन



ऐसे में टर्र-टर्र देता है साहस  
सब कुछ कर देने का

बिना भय के अँधेरे के साम्राज्य में घुसपैठ है टर्र-टर्र  
कल पूरी रात

इन मेढ़कों के टर्र-टर्र के साथ  
मैं भी बुद्बुदा रही थी नींद में

बहुत कुछ अनकला, अनसुना और अनसुलझा  
जिसे बायं नहीं किया था अब तक

समय की ताक पर  
रख दिया था जिन शब्दों को

आज वे बारिश बन  
बरस रहे हैं बूँद-बूँद

दूट रहा है गूँगेपन का तिलिस्म  
और

मेढ़क का टर्र-टर्र  
भेद रहा है राष्ट्रीय बहरेपन को

**मधु सिंह**

नई पीढ़ी की कवयित्री



# गांव के युवाओं के लिए सुनहरा मौका जल्द थुरू करें ये 4 बिजनेस

@ सौम्या चौबे

**श**हरों का तो तेजी से विकास हो रहा है खराब होती जा रही है। शहर विकास और औद्योगिक करण की ओर बढ़ रहे हैं जबकि गांव में आज लोगों की आय के बहुत कम साधन हैं। गांव में रहने वाले युवा रोजगार की तलाश में शहरों का रुख कर रहे हैं। उन्हें ये बताने वाले बहुत कम लोग हैं कि गांव में business कैसे करें इसकी असली वजह है गांव में जीने के लिए जरूरी मूलभूत सुविधाओं का ना होना। लेकिन आपको चिंता करने की बहुत ज्यादा जरूरत नहीं है।

इससे निपटने के लिए सरकार गांव के लोगों को गांव में ही व्यापार करने के लिए प्रेरित कर रही है। गांव की दशा तभी बदलेगी जब गांव के युवा गांव में रहकर व्यापार करेंगे और अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी रोजगार देंगे। इसलिए आज मैं आपको बताने जा रहा हूँ कि ऐसे कौन-कौन से व्यापार हैं जो बहुत आसानी से गांव में किये जा सकते हैं।

## गांव में चलने वाले Business

Village best business: वैसे तो कोई भी बिजनेस करने का प्लान किया जा सकता है लेकिन बिजनेस करने से पहले वहाँ की परिस्थिति का अंकलन करना बहुत ज़रूरी होता है। बिना सोचे समझे व्यापार करने से ज्यादातर मामलों में घाटा ही होता है। शहर में व्यापार की ज्यादा संभावना होती है क्योंकि वहाँ संसाधन ज्यादा होते हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि गांव में व्यापार नहीं किया जा सकता। गांव में भी बहुत अच्छा और मोटी कमाई वाला व्यापार किया जा सकता है।

गांव में डेयरी, ऑर्गेनिक खेती, बीज और खाद की दुकान और आटा चक्की ये कुछ ऐसे बिजनेस हैं जो लंबे समय तक चल सकते हैं और अच्छा मुनाफा भी दे सकते हैं। आइये इन सभी बिजनेस के बारे में एक-एक करके विस्तार से जानते हैं।

## 1-डेयरी बिजनेस



ग्रामीण क्षेत्रों के लोग आसानी से डेयरी का बिजनेस शुरू कर सकते हैं गांव में गाय या भैंस पालकर दूध उत्पादन करना और बेचना साथ ही दूध से बनने वाले उत्पाद जैसे दही, घी, पनीर बेचने का काम बहुत मुनाफा

वाला होता है।

शुरुआत में कम पशुओं को रखें या शुरुआत में आप आस-पास के पशुपालकों से दूध कलेक्शन करके भी काम शुरू कर सकते हैं इसमें मुनाफा भी अच्छा है और ये हमेशा चलने वाला बिजनेस है। क्योंकि किसी भी मौसम में लोग चाय, कॉफी, दूध, घी और दही जैसी चीजों को इस्तेमाल करना बन्द नहीं करते। सरकार डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए लोन भी दे रही है अगर आप के पास काम शुरू करने के लिए पैसे नहीं हैं तो आप सरकारी स्कीम के तहत बैंकों से लोन ले कर अपना बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इस बिजनेस में अच्छा और मोटा मुनाफा की बड़ी गुंजाइश है।

## 2. ऑर्गेनिक खेती



डेयरी के बाद आर्गेनिक फार्मिंग भी एक अच्छा उद्योग हो सकता है। आजकल खेतों में ज्यादा उत्पादन के लिए बहुत ज्यादा मात्रा में कीटनाशक और खाद का प्रयोग किया जा रहा है जो मिट्टी की उर्वरा शक्ति को तो खराब कर ही रहा है साथ ही हमारे स्वास्थ्य पर भी खराब इंपैक्ट पड़ रहा है। इससे कई तरीके की खतरनाक बिमारियाँ हो रही हैं। इसलिए अब आर्गेनिक खेती की डिमांड बढ़ी है और लोग आर्गेनिक तरीके से उगाई गयी फसलों का ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। इसलिए अगर आप आर्गेनिक खेती करके अनाज, फल और सब्जियाँ उगाते हैं तो आप अच्छा पैसा कमा सकते हैं। क्योंकि आर्गेनिक फसलों की मिट्टी की ज्यादा होती है।

इसके लिए सबसे पहले केमिकल वाली खाद और कीटनाशक की जगह गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक दवाइयों का उपयोग खेतों में करके फसल उगायें। आर्गेनिक खेती के लिए ऐसे खेतों का चुनाव करें जिसमें कम से कम 1 साल तक कीटनाशक और केमिकल खाद, यूरिया-डाई का इस्तेमाल न किया गया हो।

इससे हम लोगों को खतरनाक बीमारियों से बचा सकते हैं और आने वाली पीढ़ी के भविष्य के लिए भी ये एक अच्छा कदम हो सकता है। सरकार जैविक खेती को मजबूरी से दे रही है बढ़ावा सरकार भी जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है और सरकार की ओर से इसके लिए सब्सिडी और ट्रेनिंग भी

दी जा रही है। जैविक उत्पादों की इस समय मार्केट में डिमांड बहुत ज्यादा है। जिसकी वजह से सब्जियाँ, फल, अनाज, दालें और इसके अलावा भी कई तरीके की फसलें आर्गेनिक खेती करके उगाई जा रही हैं।

## 3. खाद और बीज की दुकान



खाद और बीज की दुकान भी गांव में बिजनेस का एक अच्छा विकल्प हो सकता है क्योंकि खेती के लिए बीज और खाद तो हर एक किसान खरीदता ही है। इसके लिए सबसे पहले आपको कृषि विभाग से लाइसेंस लेना होगा और फिर अगर आपने सही जगह पर दुकान खोल दी तो खेती के सीजन में आप बहुत मुनाफा कमा सकते हैं। बस शुरू में पैसे अपनी जेब से लगाने होंगे ताकि दुकान में डिमांड के अनुसार सामान पर्याप्त हो। दुकान में खेती का हर जरूरी सामान रखें और फिर आस-पास के किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक और खेती का हर सामान बेचिये।

## 4. आटा चक्की

शहरों में कई तरीके का पैकेट बंद आटा और बेसन जैसी चीजों मिल जाती हैं लेकिन गांव में इस तरह की पैकेट बंद चीजों का चलन अभी नहीं है गांव के लोग गेहूँ,



चना, मक्का, जौ पिसवाने चक्की जाते हैं। आप गांव में आटा चक्की की मशीन लगाकर अच्छे पैसे कमा सकते हैं। क्योंकि किसान कभी वो चीजें बाजार से खरीद कर नहीं खाता जो वो अपने खेतों में पैदा करता है। यह हर घर की जरूरत है।

आटा चक्की से आप आटा पीस कर पैसे तो कमा ही

सकते हैं साथ ही साथ आप आटे और बेसन जैसी चीजों की पैकिंग करके अपना ब्रांड बनाकर बाजार में बेच भी सकते हैं और लाखों की कमाई कर सकते हैं।

**अच्छी रिसर्च और कड़ी मेहनत की होती है जरूरत**

यह कुछ शानदार ऑप्शन हैं जिसके जरिए गांव में रहकर मोटी कमाई की जा सकती है बशर्ते व्यापार शुरू करने से पहले अच्छी तरह से रिसर्च और कड़ी मेहनत की जरूरत होती है।

फिलहाल सरकार और व्यवस्था व्यापार करने के लिए बहुत अनुरूप है। अगर आप थोड़ा सा भी मन बनाएं तो बहुत अच्छे तरीके से अच्छी कमाई कर सकते हैं वो भी अपने परिवार और गांव में रहकर। ऊपर बताए गए 4 विकल्प के अलावा भी कई और विकल्प मौजूद हैं जो आपको गांव में रहकर अच्छी आमदनी दे सकते हैं।



# विश्व ऊर्जा सम्मेलन में भारत की सौर ऊर्जा को मिली वैश्विक तारीफ

**जे**

नेवा की ठंडी हवा में गर्म चर्चा हो रही है। 12 अक्टूबर 2025 को विश्व ऊर्जा कांग्रेस में दुनिया के नेता इकट्ठा हुए। यहां भारत की सौर ऊर्जा की कहानी ने सबका दिल जीत लिया। भारत ने 2070 तक नेट-जीरो का वादा किया है और सौर ऊर्जा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रतिनिधियों ने कहा कि भारत का यह प्रयास न सिर्फ खुद के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए मिसाल है। खासकर वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए। यह खबर उन भारतीयों के लिए खुशी की है जो पर्यावरण की चिंता करते हैं।

## जेनेवा की सभा: भारत की सूरज की किरणें चमकीं

विश्व ऊर्जा कांग्रेस हर तीन साल में होती है। इस बार जेनेवा में 6 से 9 अक्टूबर तक चली, लेकिन 12 अक्टूबर को भी चर्चाएं जारी रहीं। यहां 18000 से ज्यादा नेता, मंत्री और विशेषज्ञ आए। भारत के सौर ऊर्जा कार्यक्रमों पर खूब बात हुई। प्रतिनिधियों ने भारत की तारीफ की कि कैसे वह साफ ऊर्जा में नेतृत्व कर रहा है।

एक पैनल डिस्कशन में अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की भूमिका पर जोर दिया गया। आईएसए भारत और फ्रांस ने मिलकर शुरू किया था। अब 124 देश इसके सदस्य हैं। जेनेवा में बोला गया कि आईएसए वैश्विक दक्षिण को साफ तकनीक में आगे ले जा रहा है। भारत का 500 गीगावाट नॉन-फॉसिल ऊर्जा का लक्ष्य 2030 तक सबको प्रेरित कर रहा है।

भारत के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा, “हमारा सूरज हमें ताकत देता है।” प्रतिनिधियों ने सहमति जताई। यह तारीफ सिर्फ शब्दों की नहीं, बल्कि कार्यवाई की है। जेनेवा से लौटते हुए कई देशों ने भारत से सीखने की बात कही। यह पल भारत के सस्तेनेबल प्रयासों की वैथाता साबित करता है। लेकिन सवाल यह है कि यह सफलता कैसे मिली? चलिए, आंकड़ों की बात करें।

## सौर ऊर्जा की उड़ान: आंकड़े जो बोलते हैं

भारत की सौर ऊर्जा की कहानी आंकड़ों से भरी है। सितंबर 2025 तक भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 256 गीगावाट हो गई। इसमें सौर ऊर्जा का हिस्सा 127.3 गीगावाट है। हवा से 53.1 गीगावाट। यह दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा सौर उत्पादक बनाता है। 2030 के लक्ष्य से पांच साल पहले ही 50 प्रतिशत नवीकरणीय क्षमता हासिल कर ली।

2014 से 2024 के बीच सौर टैरिफ 69 प्रतिशत घिर गया। अब सबसे कम बोली 2 रुपये प्रति किलोवाट घंटा है। मार्च 2025 तक कुल नवीकरणीय 220.10 गीगावाट थी, जिसमें सौर 105.65 गीगावाट। पिछले दशक में 105 गीगावाट सौर जोड़ा गया। यह वैश्विक दक्षिण में एक तिहाई हिस्सा है।

सौर पार्क, रूफटॉप पैनल और किसानों के सौर पंप ने यह संभव बनाया। अप्रैल 2025 में 224 गीगावाट नवीकरणीय पहुंची। आईएसए के मुताबिक, 2050 तक सौर 30 प्रतिशत वैश्विक बिजली देगा। भारत इसमें अग्रणी है।



लेकिन यह सिर्फ बिजली नहीं, बल्कि नौकरियां भी ला रहा हैं। 2030 तक 1.5 मिलियन ग्रीन जॉब्स बनेंगी।

ये आंकड़े जेनेवा में दिखाए गए। प्रतिनिधियों ने कहा, “भारत ने दिखा दिया कि तेज विकास संभव है।” फिर भी, चुनौतियां हैं। जैसे ग्रिड इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टोरेज। लेकिन ये आंकड़े उम्मीद जगाते हैं। अब देखें कि आईएसए कैसे मदद कर रहा है।

## आईएसए: सूरज का वैश्विक गठबंधन

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत 2015 में पेरिस कॉप पर हुई। भारत और फ्रांस के नेतृत्व में। अब यह 124 सदस्यों वाला सबसे बड़ा ग्लोबल साउथ संगठन है। जेनेवा में आईएसए के डीजी आशीष खन्ना ने कहा, “पिछले 10 सालों में सौर क्षमता दोगुनी हुई। ज्यादातर ग्लोबल साउथ से।”

आईएसए के चार संघ हैं: कैटेलिटिक फाइनांस हब, कैपेसिटी बिल्डिंग, रीजनल एंगेजमेंट और टेक्नोलॉजी रोडमैप। अफ्रीका सौर फैसिलिटी से छोटे निवेश को 10-20 गुना बढ़ाया जा रहा। स्मॉल आइलैंड डेवलपिंग स्टेट्स प्लेटफॉर्म से छोटे द्वीप देशों को मदद।

भारत में 27-30 अक्टूबर 2025 को आठवीं आईएसए असेंबली होगी। थीम: “वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड।” यहां ईज ऑफ ड्रॉइंग सोलर 2025 और सोलर ट्रेंड्स 2025 रिपोर्ट लॉन्च होंगी। जेनेवा में इनकी झलक दिखाई गई। प्रतिनिधियों ने सराहा कि आईएसए महत्वाकांक्षा से कार्रवाई की ओर बढ़ रहा।

फ्लोटिंग सोलर, एआई, ग्रीन हाइड्रोजन और एप्रीकल्चर सोलर पर फोकस। भारत ने सोलर टेक्नोलॉजी एप्लीकेशन रिसोर्स सेंटर (स्टार-सी) से 10 देशों में सेंटर बनाए। 2025 अंत तक 16 होंगे। यह वैश्विक नेतृत्व

## नेट-जीरो 2070: हरा भविष्य, मजबूत अर्थव्यवस्था

2070 तक नेट-जीरो का वादा भारत का बड़ा कदम है। जेनेवा में इसे सराहा गया क्योंकि यह जलवायु चुनौतियों से लड़ने का रास्ता है। सौर ऊर्जा से ऊर्जा सुरक्षा बढ़ेंगी। आयातित ईधन पर निर्भरता कम होंगी।



इससे ट्रिलियन रुपये की बदल या पर्यावरण के लिए अच्छा, लेकिन अर्थव्यवस्था के लिए भी। सौर से ग्रीन जॉब्स बढ़ेंगी। विनिर्माण, इंस्टॉलेशन और मैटेनेंस में लायरों रोजगार। ग्रामीण इलाकों में एव्रीवोल्टेज्स से किसानों को फायदा। नौसम की अनिश्चितता में सौर रिस्थर ऊर्जा देगा। जेनेवा में चर्चा हुई कि भारत की यह यागा वैश्विक मॉडल बनेगी। आईएसए रिपोर्ट कहती है, भारत बिजली मांग बढ़ाने के लिए रिव्यूएबल और व्यूक्लियर पर निवेश कर रहा। लेकिन संतुलन जरूरी।

फॉसिल फ्यूल अभी भी है, लेकिन सौर-विंड ग्रोथ डिमांड से आगे निकल गई। यह वादा सिर्फ शब्द नहीं।

सोलर यावर कांग्रेस 2025 में मोटी सरकार की तारीफ हुई। अंग्रेजी श्रीपद येस्सो नायक ने कहा, “दशक में ऐतिहासिक प्रगति।” लेकिन सवाल उठता है, आगे क्या? चुनौतियां हैं, जैसे लैंड एक्विजिशन और कॉन्विटिटी। फिर भी, यह प्रेरणा देता है। निवेश बढ़ेंगे, ग्रीन जॉब्स आएंगी।

दिखाता है। लेकिन क्या यह सिर्फ भारत का फायदा है? नहीं, पूरी दुनिया का।

## आगे की राह: चुनौतियां और नई उम्मीदें

जेनेवा की तारीफ से उत्साह है, लेकिन रास्ता आसान नहीं। भारत को 2030 तक 50 प्रतिशत रिन्यूएबल चाहिए। अभी 50 प्रतिशत हो गया, लेकिन डिमांड बढ़ रही। ईवी, कूलिंग और डेटा सेंटर से बिजली जरूरत दोगुनी। ग्रिड और स्टोरेज मजबूत करने होंगे।

चीन ने 2025 के पहले छमाही में 256 गीगावाट सौर लगाया, दुनिया से ज्यादा। भारत इससे सीख सकता।

शशि थरूर ने कहा, “चीन से प्रेरणा लें।” लेकिन भारत का मॉडल अलग: लोकल मैन्युफैक्चरिंग और सब्सिडी।

आईएसए असेंबली में ये मुद्दे उठेंगे। जेनेवा ने दिखाया कि भारत वैश्विक लीडर है। निवेशकों के लिए अवसर: 1.5 ट्रिलियन डॉलर क्लाइमेट फाइनांस चाहिए 2030 तक।

सोलर पार्क से ग्रीन बॉन्ड्स तक। लेकिन यह वैलिडेशन है। राष्ट्रीय प्रयास सही दिशा में। जलवायु चुनौतियों में ऊर्जा सुरक्षा और ग्रीन जॉब्स से मजबूत भारत। लेकिन सोचें, अगर हम और तेज चलें तो क्या? यह सूरज की किरणें हमें रास्ता दिखा रही हैं। आगे बढ़ें, साथ मिलकर।

# आथवर्यजनक मोड़: भारत ने तालिबान, पाकिस्तान और चीन के साथ मिलकर अमेरिका को कहा 'नहीं'

**क**ल्पना कीजिए कि दुनिया की राजनीति में अचानक ऐसा मोड़ आ जाए जहां पुराने दुश्मन एक साथ खड़े हो जाएं। ठीक वही हुआ है अफगानिस्तान के बग्राम एयरबेस को लेकर। 8 अक्टूबर 2025 को भारत ने रूस, चीन, पाकिस्तान, ईरान और तालिबान के साथ मिलकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की योजना का विरोध किया। ट्रंप चाहते थे कि अमेरिका फिर से अफगानिस्तान में अपना पुराना एयरबेस हासिल कर ले। लेकिन इस क्षेत्र के देशों ने साफ कह दिया- अफगानिस्तान की जमीन पर कोई विदेशी सैन्य ताकत नहीं चलेगी। यह खबर भारत के लिए खास है, क्योंकि यह दिखाती है कि नई दिल्ली कैसे पड़ोसियों के साथ तालमेल बिठा रही है, जबकि अमेरिका के साथ रिश्ते भी संभाले रख रही है।

यह घटना मॉस्को में हुई अफगानिस्तान पर सलाहकारी बैठक से जुड़ी है। वहां सभी देशों ने एक संयुक्त बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि अफगानिस्तान या उसके आसपास किसी देश की सैन्य मौजूदगी क्षेत्र की शांति के लिए खतरा है। तालिबान ने भी साफ शब्दों में कहा कि अफगानिस्तान आजाद देश है, यहां विदेशी सैनिकों का कोई स्थान नहीं। यह विरोध सिर्फ शब्दों का नहीं, बल्कि एक बड़ी रणनीति का हिस्सा लगता है। लेकिन क्यों? और भारत इसमें क्यों कूद पड़ा?

## बग्राम की पुरानी कहानी: अमेरिका का 'सुनहरा हवाई अड्डा'

सबसे पहले, बग्राम एयरबेस को समझिए। यह अफगानिस्तान का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है, काबुल से करीब 50 किलोमीटर दूर। दो लंबे रनवे हैं यहां- एक 3.6 किलोमीटर का और दूसरा 3 किलोमीटर का। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों के बीच बसा यह जगह बड़े-बड़े सैन्य विमानों के लिए प्रफेक्ट है। 2001 में 11 सितंबर के हमलों के बाद अमेरिका ने अफगानिस्तान पर हमला किया। तब से बग्राम अमेरिका का मुख्य सैन्य केंद्र बन गया। हजारों अमेरिकी सैनिक यहां तैनात थे। यहां तक कि 'युद्ध पर आतंक' के नाम पर कई कैदी रखे गए, जिनमें से कई सालों तक बिना मुकदमे के कैद रहे। कुछ को यातनाएं भी दी गईं।

ट्रंप ने 2020 में तालिबान से एक समझौता किया, जिसमें अमेरिका ने वादा किया कि 2021 तक सभी सैनिक हटा देंगे। बाइडेन के समय यह पूरा हुआ, और तालिबान ने काबुल पर कब्जा कर लिया। बग्राम भी तालिबान के हाथ लग गया। लेकिन अब ट्रंप फिर राष्ट्रपति बनने के बाद कह रहे हैं कि यह गलती थी। 18 सितंबर 2025 को लंदन में उन्होंने कहा कि बग्राम चीन की सीमा से सिर्फ एक घंटे दूर है। वहां चीन के न्यूक्लियर हथियार बनाने का कारखाना है। अगर अमेरिका इसे वापस ले ले, तो चीन पर नजर रखना आसान हो जाएगा। ट्रंप ने धमकी भी दी कि अगर तालिबान बेस नहीं लौटाएंगे, तो अफगानिस्तान के साथ 'बुरे काम' होंगे।

लेकिन सच्चाई क्या है? कई अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि ट्रंप का दावा गलत है। चीन का कोई न्यूक्लियर कारखाना शिनजियांग में नहीं है, जो बग्राम से



इतना करीब हो। फिर भी, बग्राम की रणनीतिक अहमियत साफ है। यह मध्य एशिया के दिल में है, जहां से ईरान, पाकिस्तान, भारत सब जुड़े हैं। अगर अमेरिका यहां लौटे, तो पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ सकता है। सोचिए, जैसे कोई पुराना दोस्त घर में घुस आए और कहे- यह मेरा कमरा है। पड़ोसी खुश थोड़े न होंगे! यही वजह है कि क्षेत्र के देश एकजुट हो गए।

## मॉस्को का संदेश: दुश्मनों का अनोखा गठजोड़

7 अक्टूबर 2025 को मॉस्को में सातवीं 'मॉस्को फॉर्मेट कंसल्टेशन ऑन अफगानिस्तान' हुई। इसमें अफगानिस्तान, ईरान, कजाकिस्तान, चीन, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, उज्बूकिस्तान और भारत शामिल थे। बेलारूस मेहमान था। खास बात यह कि तालिबान का प्रतिनिधिमंडल पहली बार पूर्ण सदस्य के रूप में आया, विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी के नेतृत्व में। रूसी विदेश मंत्री सर्जेंह लावरोव और अफगानिस्तान के लिए रूसी दूत जामिर काबुलोव भी थे।

अगले दिन, 8 अक्टूबर को सभी ने संयुक्त बयान जारी किया। इसमें कहा गया- अफगानिस्तान को स्वतंत्र, एकजुट और शांतिपूर्ण देश बनाने का पूरा समर्थन। लेकिन किसी भी देश द्वारा अफगानिस्तान या उसके पड़ोसी इलाकों में सैन्य ढांचा लगाने की कोशिश अस्वीकार्य है। यह क्षेत्रीय शांति के हित में नहीं। बयान में बग्राम का नाम नहीं लिया, लेकिन सब समझ गए कि यह ट्रंप की योजना पर सीधा प्रहार है। तालिबान के मुत्तकी ने कहा, "अफगानिस्तान आजाद देश है।" इतिहास गवाह है कि हम कभी विदेशी सैनिकों को स्वीकार नहीं करें। हमारा फैसला वही रहेगा- अफगानिस्तान को आजाद और स्वतंत्र रखना।"

यह गठजोड़ अनोखा है। भारत और पाकिस्तान, जो हमेशा एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़े रहते हैं। भारत और चीन, जिनके बीच सीमा विवाद है। रूस और अमेरिका तो पुराने प्रतिद्वंद्वी। ईरान भी अमेरिका से नफरत करता है। अगर बग्राम पर अमेरिका का कब्जा हो, तो यह रास्ते अवरुद्ध हो सकते हैं। प्लास, आतंकवाद का खतरा। आईएसआईएस-के

जैसे गृष्ण अफगानिस्तान में सक्रिय हैं। भारत चाहता है कि क्षेत्रीय देश मिलकर आतंकवाद से लड़े। संयुक्त बयान में भी यही कहा गया- आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाए।

फिर, तालिबान के विदेश मंत्री मुत्तकी का भारत दौरा। 9 से 16 अक्टूबर तक। यह पहला ऐसा दौरा है। संयुक्त राष्ट्र की मंजूरी मिली। इससे भारत-तालिबान के बीच सीधी बातचीत हो सकेगी। शायद मानवीय मुद्दों पर, जैसे महिलाओं की शिक्षा, लेकिन राजनीतिक भी। विपक्ष में राहुल गांधी ने आलोचना की। कहा कि मोदी सरकार महिलाओं के सम्मान में कमज़ोर है। लेकिन एक एक्स पोस्ट में किसी ने लिखा, "सीआईए बग्राम चाहती है ताकि चीन, भारत, ईरान पर जासूसी करे और पाकिस्तान की मदद करे। राहुल का द्रामा इसी से जुड़ा।" भारत का यह रुख संतुलित लगता है। अमेरिका से रिश्ते खराब नहीं होंगे, लेकिन पड़ोसी देशों से तनाव कम होगा। सोचिए, अगर भारत अकेला खड़ा होता, तो पाकिस्तान मजाक उड़ाता। लेकिन अब सब साथ हैं। यह भारत की कूटनीति की ताकत दिखाता है।

भारत के विशेषज्ञ कहते हैं कि यह कदम लंबे समय के फायदे का है। अफगानिस्तान को क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में जोड़ना। जैसे, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर। इससे भारत का व्यापार बढ़ेगा। मानवीय सहायता जारी रखना। संयुक्त बयान में कहा गया कि अफगानिस्तान को आर्थिक एकीकरण में मदद करें। भारत पहले ही दवाइयां, अनाज भेज रहा है। यह विरोध सिर्फ नकारात्मक नहीं, सकारात्मक प्लान का हिस्सा है। लेकिन सवाल यह कि क्या यह गठबंधन टिकेगा? ट्रंप की धमकियां क्या असर डालेंगी?

## आगे का रास्ता: शांति की उम्मीद या नया तनाव?

यह घटना दक्षिण एशिया के लिए बड़ा मोड़ है। ट्रंप का जवाब अभी साफ नहीं है। उन्होंने सितंबर में धमकी दी थी, लेकिन अब चुप हैं। कुछ अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि बग्राम वापस लेना मुश्किल है। इसके लिए 10,000 से ज्यादा सैनिक चाहिए, हवाई रक्षा प्रणाली। यह नई जंग जैसा होगा। ट्रंप शायद इसे चुनावी मुद्दा बना रहे हैं, लेकिन हकीकत में लागू करना कठिन।

क्षेत्रीय देशों के लिए फायदा साफ। पाकिस्तान को तालिबान से झगड़ा है- हाल ही में काबुल पर हवाई हमले किए। लेकिन बग्राम पर एकजुटता से पाकिस्तान को संदेश मिला कि अमेरिका का साथ न लें। चीन को राहत, क्योंकि अमेरिकी निगरानी कम होगी। रूस को खुशी, क्योंकि अमेरिका का विस्तार रुका। ईरान को भी, क्योंकि बग्राम से ईरान पर नजर रखना आसान होता।

भारत के लिए यह संतुलन का खेल है। अमेरिका से सैन्य सौदे जारी रहेंगे, लेकिन अफगानिस्तान में भारत की भूमिका मजबूत होगी। तालिबान से रिश्ते बेहतर होने से भारत को दुश्मनों पर नजर रखने में मदद मिलेगी। लेकिन चुनौतियां भी। अफगानिस्तान में महिलाओं पर पाबंदियां, आर्थिक संकट। संयुक्त राष्ट्र कहता है कि लड़ाकियां चार साल से स्कूल से बाहर हैं। इंटरनेट पर सेंसेशनियप। भारत को इन मुद्दों पर तालिबान से बात करनी होगी।



# प्रभु कृपा दुर्घट निवारण समाप्ति

BY

# Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



## ULTIMATE HAIR SOLUTION

# NO

ARTIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

# KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :